दैनिक पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 4 : अंकः 4 | ग्वालियर, 11 नवम्बर शनिवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर

बीएस येदियुरप्पा के बेटे बीवाई विजयेंद्र को मिली कर्नाटक की कमान, क्यों बने पार्टी की पसंद?

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और बीजेपी के वरिष्ठ नेता बीएस येदियुरप्पा के बेटे बीवाई विजयेंद्र को पार्टी की प्रदेश इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है. उन्होंने बीजेपी नेता नलिन कुमार कटील की जगह ली है. 2020 में विजयेंद्र को बीजेपी की कर्नाटक इकाई का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया था.बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह की ओर से शुक्रवार (10 नवंबर) को जारी एक बयान के मुताबिक, बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने विधायक विजयेंद्र येदियुरप्पा को कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है. बयान में कहा गया है कि यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू होगी.

दिल्ली आबकारी नीति केसः संजय सिंह की न्यायिक हिरासत कोर्ट ने बढ़ाई, अरविंद केजरीवाल का जिक्र कर किया ये दावा

दिल्ली आबकारी नीति मामले में कोर्ट ने आम आदमी पार्टी सासंद संजय सिंह की न्यायिक हिरासत 24 नवंबर तक बढ़ा दी है. साथ ही राउज एवेन्यू कोर्ट के स्पेशल जज एम के नागपाल ने संजय सिंह को मजीठिया मामले में निकले प्रोडक्शन वारंट में पेशी के लिए अमृतसर ले जाने के लिए ट्रेन द्वारा 18 नवंबर की इजाजत दी.कोर्ट से निकलते वक्त संजय सिंह ने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को फंसाने की बहुत बड़ी साजिश हो रही है. उन्होंने कहा, सिर्फ गिरफ्तारी नहीं, ये लोग केजरीवाल के साथ बड़ी घटना को अंजाम देने वाले हैंसिंह ने ये आरोप ऐसे समय में लगाया है जब पिछले दिनों दिल्ली आबकारी नीति मामले में ही प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली के सीएम और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संजोयक अरविंद केजरीवाल को समन जारी किया था. हालांकि उन्होंने पत्र लिखकर आपत्ति जताई और केंद्रीय जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं हुए.आप सांसद संजय सिंह को 4 अक्टूबर को लंबी पूछताछ के बाद ईडी ने गिरफ्तार किया था. इससे पहले 27 अक्टूबर को राउज एवेन्यू कोर्ट ने 10 नवंबर तक संजय सिंह की न्यायिक हिरासत बढ़ाई थी. सबसे पहले संजय सिंह को 5 अक्टूबर को कोर्ट में पेश किया था, जहां कोर्ट ने उन्हें 10 अक्टूबर तक ईडी रिमांड में भेजा था. इसके बाद 10 अक्टूबर की पेशी में उनकी रिमांड 3 दिनों के लिए और बढ़ा दी गई थी. 13 अक्टूबर को कोर्ट ने संजय सिंह को 27 अक्टूबर तक न्यायिक हिरासत में भेजा था. दिल्ली आबकारी नीति मामले में ही पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को भी ईडी और सीबीआई गिरफ्तार कर चुकी है. इस समय सिसोदिया न्यायिक हिरासत में हैं. पिछले दिनों सिसोदिया की जमानत याचिका को सुप्रीम कोर्ट में खारिज कर दिया था.

मुख्य चिंता सुरक्षा को लेकर है., कनाडा को लेकर भारत ने अमेरिका के सामने स्पष्ट किया रुख

भारत और कनाडा के बीच खालिस्तान समर्थक हरदीप सिंह निज्जर के मर्डर को लेकर विवाद जारी है. इस बीच भारत और अमेरिका की टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय वार्ता में सरकार ने कनाडा को लेकर अपनी चिंताओं को स्पष्ट किया. भारत ने कहा कि हमारी मुख्य चिंता सुरक्षा है. टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय वार्ता के बाद विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने कहा, हम अपने सभी दोस्तों और पार्टनर के साथ लगातार बातचीत कर रहे हैं. हमने मामले को लेकर अपनी स्थिति कई मौके पर विस्तार से समझाई है. हमारी मुख्य चिंता सुरक्षा है. आपने हाल ही में गुरपतवंत सिंह पन्नू का वीडियो देखा होगा. इससे गंभीर सुरक्षा चिंताएं उभरती है. हमने अपने दोस्तों और पार्टनर को अपनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर दी है. हमें लगता है कि वे इसे समझते हैं **गुरपतवंत सिंह पन्नू ने क्या धमकी दी थी-**सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) के संस्थापक गुरपतवंत सिंह पन्नू ने हाल ही में एक वीडियो सामने आया था. इसमें उसने एअर इंडिया की 19 नवंबर की उड़ानों के यात्रियों को धमकी दी है, इस दिन आईसीसी विश्व कप फाइनल होगा.

भारत पन्नू समेत अन्य खालिस्तान समर्थकों पर लगातार कार्रवाई की मांग करता रहा है. हालांकि, कनाडा की तरफ से ठोस कदम नहीं उठाए जाने से भारत सरकार ने कई मौकों पर नाराजगी जताई है.दिल्ली में हुई टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय वार्ता में अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने किया. भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्री एस. जयशंकर और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किया.

मुजफ्फरनगर में छात्र की पिटाई मामले में नहीं हुआ आदेश का पालन तो एस सी ने यूपी सरकार को लगाई फटकार, क्या कुछ कहा?

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के एक स्कूल में एक मुस्लिम छात्र और उसके सहपाठियों की काउंसलिंग के लिए एक एजेंसी नियुक्त करने के आदेश का पालन नहीं होने पर सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (10 नवंबर) को राज्य सरकार को फटकार लगाई.कथित तौर पर होमवर्क पूरा न होने पर स्कूल की महिला शिक्षक ने छात्रों को थप्पड़ मारने का निर्देश दिया था. स्कूल की महिला शिक्षक पर पीड़ित लड़के को लेकर सांप्रदायिक टिप्पणी करने का भी आरोप लगा है.यह देखते हुए कि अदालत के आदेश का पालन नहीं हुआ, जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस पंकज मिथल की बेंच ने राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव को किसी भी कड़ी कार्रवाई से बचने के लिए अगली सुनवाई के दौरान वर्चुअल तरीके से उपस्थित रहने का निर्देश दिया है.सुप्रीम कोर्ट ने घटना में शामिल बच्चे और उसके सहपाठियों की काउंसलिंग के मोड और तरीके का सुझाव देने के लिए मुंबई के टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज को नियुक्त किया था.मुताबिक, बेंच ने कहा कि पक्षों के वकील को सुनने के बाद हमारा मानना है कि उत्तर प्रदेश सरकार और विशेष रूप से शिक्षा विभाग ने समय-समय पर इस अदालत की ओर से दिए गए विभिन्न आदेशों का पालन नहीं किया है.

सेना के जवानों के साथ दिवाली मनाएंगे पीएम मोदी, जम्मू-कश्मीर में सीमा के नजदीक भरेंगे जोश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारतीय सेना के जवानों के साथ दिवाली मनाएंगे. एबीपी न्यूज को सूत्रों ने बताया कि जम्मू कश्मीर के अखनूर में स्थित जोरियन में भारतीय सेना के 191 ब्रिगेड के साथ दिवाली के मौके पर पीएम मोदी मौजूद रहेंगे. इसके अलावा वो बीएसएफ के जवाने के साथ भी दिवाली के लेकर मौजूद रहेंगे. हालांकि इसकी लोकेशन अभी तक सामने नहीं आई है. दरअसल, देशभर में दिवाली का त्योहार रविवार (12 नवंबर) को मनाया जाएगा. इसको लेकर तैयारियां जोर-शोर से चल रही है. **पीएम मोदी सेना के साथ मनाते रहे हैं दिवाली -**पॅपीएम मोदी हर साल दिवाली जवानों के साथ मनाते हैं. पिछले साल उन्होंने कारगिल में सेना के जवानों संग दीपों के पर्व का उत्सव मनाया था. वहीं 2021 में उन्होंने जम्मू कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में सैनिकों के साथ दिवाली मनाई थी.,साल 2020 की बात करें तो पीएम मोदी राजस्थान के जैसलमेर में जवानों के साथ दीपों का पर्व मनाने पहुंचे थे. उन्होंने 2019 में राजौरी जिले में सैनिकों के साथ दिवाली

मनाई थी. वहीं 2018 में पीएम मोदी ने उत्तराखंड के हरसिल गांव में भारत-चीन सीमा के पास सेना और आईटीबीपी के जवानों के साथ दिवाली मनाई थी.

पीएम मोदी ने क्या अपील की- पीएम मोदी ने इस दिवाली को लेकर लोगों से विनिर्मित उत्पाद खरीदने की अपील की. उन्होंने हाल ही में सोशल मीडिया मंच एक्सपर लिखा, '' इस दिवाली आइए हम नमो ऐप पर स्वोकल फॉर लोकल के साथ भारत की उद्यमशीलता तथा रचनात्मक भावना का जश्न मनाएं.''उन्होंने कहा, '' ऐसे उत्पाद खरीदें जो स्थानीय स्तर पर बनाए गए हों और फिर नमो ऐप पर उत्पाद या निर्माता के साथ एक सेल्फी साझा करें. अपने मित्रों और परिवार को इस कड़ी में शामिल होने और सकारात्मकता की भावना फैलाने का आह्वान करें.''मोदी ने कहा, '' आइए हम स्थानीय प्रतिभाओं का समर्थन करने, साथी भारतीयों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने और अपनी परंपराओं को समृद्ध बनाए रखने के लिए डिजिटल मीडिया की ताकत का इस्तेमाल करें. '

राहुल गांधी का पीएम पर निशाना, नरेंद्र मोदी पहले कहते थे मैं ओबीसी हूं,

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जनगणना के मसले पर एक बार फिर पीएम मोदी को निशाने पर लिया है. साथ ही उन्होंने दावा किया है कि कांग्रेस सत्ता में आई तो एमपी के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी आधारित सर्वेक्षण करवाया जाएगा. राहुल गांधी ने कहा, मध्य प्रदेश में कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद सबसे पहला काम प्रदेश में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की सही संख्या जानने के लिए जाति आधारित जनगणना कराने का है. एक एक्स-रे की तरह है जो सभी वर्गों की स्थिति सामने लाएगा, जिसके अनुसार उनके कल्याण की नीतियां बनाई जाएंगी. **पीएम मोदी पर राहुल गांधी का वार** -मध्य प्रदेश के सतना में शुक्रवार (10 नवंबर) को चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस नेता ने कहा, नरेंद्र मोदी पहले कहते थे- भाइयों और बहनों, मैं हूं, लेकिन कुछ दिनों पहले उन्होंने अपने भाषण में कहा कि देश में

सिर्फ एक जाति है- गरीब. जब से कांग्रेस ने जाति जनगणना की बात की है, तब से नरेंद्र मोदी जी के दिमाग से जाति गायब हो गई है. क्योंकि वह दलित, आदिवासी युवाओं को देश की सच्चाई नहीं बताना चाहते हैउन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ओबीसी, दलित, आदिवासी युवाओं को देश की सच्चाई नहीं बताना चाहते हैं. अब पीएम मोदी अपने किसी भी भाषण में जाति जनगणना की बात नहीं करते हैं.कांग्रेस पूर्व अध्यक्ष राहुल ने कहा कि मध्य प्रदेश की बीजेपी सरकार पर भी निशाना साधा. उन्होंने कहा क सूबे की सरकार चलाने वाले 53 आईएएस अधिकारियों में से सिर्फ एक ओबीसी अधकिारी है.उन्होंने दावा किया कि इसका मतलब यह है कि यदि राज्य का कुल बजट 100 रुपये है, तो ओबीसी अधिकारी का नियंत्रण केवल 33 पैसे यानी 0.03 फीसदी पर है. उन्होंने सरकार पर यह भी आरोप लगाया कि कर्ज संबंधी समस्याओं के चलते पछिले 18 सालों में मध्य प्रदेश में करीब 18,000 किसानों ने सुसाइड किया है.

सप्ताह में 70 घंटे वर्क आवर पर अब कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने क्या कुछ कहा?

इंफोसिस के संस्थापक एनआर नारायण मूर्ति के वर्किंग आवर बढ़ाने को लेकर दिए बयान पर बहस जारी है. अब कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी भी इसमें कूद पड़े हैं.उन्होंने नारायण मूर्ति का समर्थन करते हुए कहा कि उनके जैसे कई जन प्रतिनिधि रोज 12-15 घंटे काम करते हैं. उन्होंने एक्स पर कहा, ÷मैं सप्ताह में 70 घंटे काम को लेकर नारायण मूर्ति के बयान पर मचे हंगामे को समझ नहीं पा रहा हूं कि इसमें क्या गलत है.

शरद पवार से मिलने के तुरंत बाद दिल्ली पहुंचे अजित पवार, अमित शाह से करेंगे मुलाकात,

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार ने शुक्रवार (10 नवंबर) को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के चीफ शरद पवार से मुलाकात की. इसके तुरंत बाद अजित पवार दिल्ली पहुंचे हैं. यहां वो केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिल सकते हैं. दोनों नेताओं की मुलाकात ऐसे समय होगी जब अजित पवार गरुप की दिल्ली में बैठक होने की संभावना है. इसके अलावा शरद पवार से मिलने के तुरंत बाद अजित पवार का दिल्ली आकर शाह से मुलाकात करने को लेकर भी राजनीतिक गलियारों में कई तरह की अटकलें लगाई जा रही है.

अटकलों पर पवार परिवार क्या बोला-हालांकि तमाम अटकलों को खारिज करते हुए शरद पवार की बहन सरोज पाटिल ने एबीपी माझा से बात करते हुए कहा कि सारी मुलाकात परिवारिक है. जन्मदिन की वजह से शरद पवार और अजित पवार की प्रतापराव पवार के घर पर मुलाकात हुई. उन्होंने कहा, हम जब मिलते हैं तो हंसते और एक दूसरे का मजाक बनाते हैं. हम बहुत खुश हैं कि काफी लंबे समय बाद मिले.

शरद पवार गुट क्या बोला-शरद पवार गुट के नेता जंयत पाटिल ने कहा कि दोनों नेताओं (शरद पवार और अजित) पवार की मुलाकात परिवारिक है तो इसमें मैं क्या कह सकता हूं. मैं पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष हूं तो ऐसे में पार्टी को लेकर सवाल करिए.

इजरायल और हमास के बीच जारी जंग के दौरान भारतीय विदेश नीति की अग्निपरीक्षा, ईरान और अरब को साधना होगा कठिन

भारत की विदेश नीति अभी संभवतः वह जहाज है, जिस पर कैप्टन की भूमिका में होना और उसे कंट्रोल करना बहुत मुश्किल है. पिछले साल से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत की भूमिका अभी स्कैनर के नीचे थी ही, कि इजरायल और हमास के बीच पिछले एक महीन से चल रहे संघर्ष ने फिर से भारतीय कूटनीति की अग्निपरीक्षा सामने ला दी है. 7 अक्टूबर को जब आतंकी संगठन हमास ने इजरायल के ऊपर हमला किया और हजार से भी अधिक इजरायली नागरिकों को हलाक कर दिया था, तो भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिना किसी दुविधा के इजरायल के साथ खड़े रहने और आतंकी हमास की निंदा करने का काम किया था. उसके बाद इजरायल के जवाबी हमले में जब गाजा में नागरिक सेवाओं की हालत खराब हुई तो भारत ने वहां मानवीय सहायता भेजने में देर भी नहीं की. भारत के इजरायल को बेशर्त समर्थन से देश और विदेश में यह ामक स्थिति पैदा हुई कि भारत शायद अब पूरी तरह इजरायल के साथ खड़ा है

जेल में बंद मनीष सिसोदिया कल कर सकेंगे पत्नी से मुलाकात, कोर्ट ने दी इजाजत

दिल्ली शराब नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को राउज एवेन्यू कोर्ट ने शुक्रवार को पत्नी से मिलने की अनुमति दे दी. कोर्ट ने सिसोदिया को शनिवारको सुबह 10 से 4 बजे तक मिलने की इजाजत दी है. आम आदमी पार्टी के नेता सिसोदिया की पत्नी के बीमार होने के कारण उन्हें अनुमति दी गई है. दरअसल, सिसोदिया को सबसे पहले सीबीआई ने 26 फरवरी को गिरफ्तार किया था. फिर उनसे जेल में पूछताछ कर ईडी ने उन्हें 9 मार्च को अरेस्ट किया था.

चुनावी राज्यों में पीएम के दौरे पर ममता की चुप्पी के पीछे है कोई राज, बंगाल की सीएम पर अधीर का निशाना

लोकसभा चुनाव से पहले केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार को हराने के लिए बने इंडिया गठबंधन में विभिन्न दलों के नेताओं के बीच तालमेल को लेकर तकरार नहीं थम रहा. अब देश के पांच चुनावी राज्यों में बीजेपी के स्टार प्रचारक के तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे पर पश्चिम बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष और लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी ने सवाल खड़ा किया है.

ममता की चुप्पी के पीछे हैं कोई राज-उन्होंने इस मामले में सूबे की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की चुप्पी पर भी सवाल खड़ा किया है. अधीर रंजन चौधरी ने कहा हैं, मुझे आश्चर्य है कि जब पांच राज्यों में चुनाव हो रहे हैं और कांग्रेस और समूचे विपक्ष को हराने के लिए कड़ा मुकाबला चल रहा है, तो पीएम मोदी हर दिन चुनाव वाले राज्यों में जाने के लिए दिल्ली त्याग चुके हैं. उन्होंने (पीएम मोदी) कांग्रेस को गाली देने का सिलसिला जारी रखा है.मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की चुप्पी पर सवाल खड़ा करते हुए चौधरी ने

कहा है, ÷ममता बनर्जी इस दौरान चुप हैं. उनकी चुप्पी देखकर मुझे लगता है कि इसके पीछे कोई रहस्य होगा. वह रहस्य क्या है? मैं ममता बनर्जी से मतदाताओं को एक संदेश देने का आग्रह करता हूं. सभी पांच राज्यों में बीजेपी के खिलाफ चुनावी लड़ाई का नेतृत्व कर रही कांग्रेस का समर्थन करना जरूरी है, लेकिन चुप रहना आश्चर्यजनक है.÷आपको बता दें कि इसी महीने देश के पांच राज्यों राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और मिजोरम में चुनाव है. यहां बीजेपी ने स्टार प्रचारक के तौर पर पीएम नरेंद्र मोदी को रखा है. हरेक चुनावी राज्य में पीएम मोदी की धड़ाधड़ चुनावी रैलियां हो रही हैं,

जांच से क्यों बच रहा है एल्विश यादव? सांप का जहर कहां और किसने निकाला...पुलिस पूछना चाहती है ये सवाल

रेव पार्टियों में सांप का जहर सप्लाई करने के आरोपी और बिग बॉस ओटीटी 2 के विनर एल्विश यादव पुलिस जांच में शामिल नहीं हो रहे हैं. उसका कहना है कि वो बीमार हैं. हालांकि वो लगातार सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं. उन्होंने देर रात सोशल मीडिया पोस्ट किया और उसके बाद ब्लॉग भी बनाया. उस ब्लॉग में एल्विश यादव ने लग्जरी गा?ी, वीआईपी नंबर प्लेट का जिक्र किया.

पूछताछ में नहीं हुए शामिल- ब्लॉग में एल्विश ने बताया कि वो दोस्तों से मिले, सैलून गए, अपने गुरुग्राम वाले घर और मंदिर गए. हालांकि ब्लॉग के अंत में उन्होंने एक बार फिर तबीयत खराब होने का जिक्र करते हुए बेड रेस्ट पर होने की बात कही.सांपों की बरामदगी और सांप के जहर के मामले में नोएडा पुलिस एल्विश यादव से करीब 3 घंटे तक पूछताछ कर चुकी है. नोएडा पुलिस ने एल्विश यादव को एक बार फिर पूछताछ के लिए समन किया था, लेकिन 3 दिन बीत जाने के बाद भी वो पूछताछ में शामिल नहीं हुए.

इंस्टाग्राम पर डाला वीडियो- एल्विश यादव ने पुलिस को

बताया है कि वो बीमार हैं इसलिए पूछताछ में शामिल नहीं हो सकते. हालांकि देर रात इंस्टाग्राम पर एल्विश यादव ने एक वीडियो डाला, जिसमें वो गाना गुनगुनाते हुए नजर आ रहे हैं. इसके अलावा एल्विश शुक्रवार (10 नवंबर) को 12.30 बजे एल्विश ने एक ब्लॉग में मीटिंग करने और अपने घर जाने की बात कही. इस मामले में पुलिस को गिरफ्तार सभी पांचों आरोपियों की 2 दिन की रिमांड मिल गई है. अब पुलिस इन सभी आरोपियों से पूछताछ कर रही है. इस मामले का मुख्य आरोपी राहुल है, जिसकी एक ऑडियो सामने आई थी. उस ऑडियो में राहुल एल्विश यादव को जानने की बात कुबूल कर रहा है. इतना ही नहीं राहुल ऑडियो में ये भी बता रहा है कि इससे पहले भी वो शूटिंग के लिए एल्विश यादव के लिए सांपों का इंतजाम कर चुका है.

पुलिस के सामने ये हैं सवाल-जिन पांचों आरोपियों को पुलिस ने रिमांड पर लिया है उनसे पुलिस पूछताछ में पता लगाएगी कि ये सांप इनके पास कहां से आए? जांच में ये भी साफ हो चुका है कि सभी सांपों से जहर निकाला जा चुका था. जहर कहां, किसने निकाला और वो जहर कहां गया? इसका भी पता पुलिस को लगाना हैइसके अलावा पुलिस आरोपियों को नोएडा और गुरूग्राम भी लेकर जाएगी. पुलिस ने रिमांड लेने के दौरान अदालत को बताया था कि इन आरोपियों से सांप और जहर की रिकवरी हो सकती है. इसलिए इनसे पूछताछ जरूरी है. पुलिस ने अदालत को ये भी बताया था कि ये सभी एक गैंग की तरह काम कर रहे हैं और इनके और भी साथी हो सकते हैं.

नंदराम बघेल जी ने लाल सिंह आर्य के समर्थन में चोपाल सभायें की

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ बेताल सिंह गौड़

भारतीय जानता पार्टी गोहद बिधानसभा प्रत्याशी लाल सिंह आर्य जी के समर्थन में नंदराम बघेल जिलल पंचायत उपाध्यक्ष भमरपुरा छेकुरी गुहीसर मखोरी अडूपुरा स्हाईपुरा रतवा भदरोली देगमां बरोली एंव मौ नगर में बघेल समाज में जाकर भाजपा के लिये समर्थन मांगा इस अबसर पर मौ मण्डल अध्यक्ष गोपाल सिंह कुशबाह पूर्व मंडल अध्यक्ष रघुबीर पवैया प्रदीप बघेल बिधानसभा प्रभारी लहार ऋष्णा बघेल तिलक सिंह बघेल दीपक बघेल मंगल सिंह बघेल रामकुमार शास्त्री मटरु शर्मा रवि बघेल हरी सिंह बघेल कल्लू बघेल राजबीर छेकुरी बन्टी बघेल गयेली दीपक बघेल रामानंद बघेल आदि

चित्रकूट अमावस्या मेला की तैयारियों का कलेक्टर और एसपी ने लिया जायजा

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना सतना जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल चित्रकूट में प्रति वर्ष आयोजित होने वाले 5 दिवसीय दीपावली अमावस्या मेला के दौरान देश एवं प्रदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन पहुंचते हैं। इस वर्ष दीपावली अमावस्या मेला 10 से 14 नवंबर के बीच आयोजित हो रहा है। अमावस्या मेले के दौरान दर्शनार्थियों की सुविधाओं और कानून व्यवस्था के दृष्टिगत प्रशासन द्वारा बेहतर व्यवस्था और इंतजाम किए गये हैं। मेले की व्यवस्थाओं के संबंध में की गई तैयारियों का निरीक्षण करने कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा और पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता शुक्रवार को चित्रकूट पहुंचे

और मेला परिक्षेत्र सहित विभिन्न मुख्य स्थानों और पार्किंग स्थल का भ्रमण किया। इस मौके पर स्थानीय प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। कलेक्टर श्री वर्मा ने स्थानीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि मेले के दौरान अत्यधिक संख्या में दर्शनार्थियों की संख्या एवं विधानसभा निर्वाचन 2023 के लिये लागू आदर्श आचरण संहिता के पालन को सुनिश्चित कराते हुये भी? प्रबंधन (क्राउड मैनेजमेंट) पर विशेष फोकस रखें। मेला स्थल के विभिन्न जगहों का निरीक्षण करने के बाद पुलिस अधीक्षक ने ट्रैफिक मैनेजमेंट और बैरिकैटिंग को लेकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

महिलाओं के सम्मान के लिए हमेशा तैयार रहती है भाजपा

मेहगांव । भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी राकेश शुक्ला ने एक दर्जन गांवों मे किया जनसंपर्क,गांव मे युवाओं बुजुर्गों महिलाओं का मिल रहा अपार स्नेह आशीर्वाद जगह जगह लोगो ने पुष्प हार पहनाकर किया स्वागत भारतीय जनता पार्टी राकेश शुक्ला जिंदाबाद के लगाए नारे ,जनसंपर्क के दौरान शुक्ला ने लोगों की समस्याओं के निराकरण व विकास और महिलाओं के सम्मान के लिये निरंतर काम करने का भरोसा दिलाया ,क्षैत्र की छोटी छोटी बातो के लिये लोगों की परेशानी का हल करना मेरी जिम्मेदारी है भारतीय जनता पार्टी व्दारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओ का लाभ हर व्यक्ति तक पहुचाना और लोगो को समस्याओं से निजात दिलाने के लिये राकेश पहले भी तत्परता के साथ खडा रहा और आज भी खडा है और सदैव खडा रहेगा।आज का जनसंपर्क निम्नलिखित गावों मे रहा,सूरज पुरा, पनंऊआ, पीपरपुरा,विजयपुरा,माताकापुरा,सौंधा, चदपुरा, मानपुरा,कैंथकापुरा,मौजीकापुरा,प्रेमनगर, रठियापुरा,

भाजपा सरकार ने प्रदेश को गर्त में धकेल दिया,अटेर को बनाया दलाली का अड्डा बरैया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

जनता का आर्शीवाद मुझे मिला तो दद्दा टैक्स से मुक्ति दिलवाऊंगा :कटारे

भिण्ड । अटेर विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी हेमन्त सत्यदेव कटारे के समर्थन में ग्राम लखनपुरा,परा एवं फूप में जनसभाएं आयोजित हुई जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता फूल सिंह बरैया तथा विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक राधेलाल बघेल मौजूद रहे,श्री बरैया ने कहा की संविधान खतरे में है,भाजपा सरकार संविधान को खत्म करना चाहती है,आज दलित लोगों पर भाजपा सरकार ने अत्याचार किए है अब समय आ गया है,बदला लेने का हम सबको संविधान बचाने के लिए कांग्रेस को वोट देना है,क्योंकि बसपा संविधान की रक्षा नही कर सकती इसलिए संविधान बचाने के लिए भी कांग्रेस के पक्ष में मतदान करना है इसी प्रकार अटेर विधानसभा में

दलितों के ऊपर भारी अत्याचार किया गया दलितों पर झूठी एफआईआर दर्ज कराई गई तथा दलितों का शोषण किया गया अब बदला लेना है हम सबको मिलकर हेमन्त कटारे के हाथों को मजबूत करना है, श्री कटारे को विधायक आप बनाओ मध्यप्रदेश में सरकार में मंत्री मैं बनाऊंगा।

वहीं पूर्व विधायक राधेलाल बघेल ने भी भाजपा सरकार को आ? हाथों लेते हुए कहा कि वल्लभ भवन को दलाली का अड्डा बना दिया,आपके जनबल को भाजपा सरकार ने धनबल से गिरा दिया,विधायको को खरीदकर जनता द्वारा चुनी गई सरकार गिरा दी।सभा में कांग्रेस प्रत्याशी हेमन्त कटारे की माँ श्रीमती मीरा कटारे ने भी जनता से अपने बेटे को आर्शीवाद देने की अपील की । अटेर विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी हेमन्त कटारे ने कहा कि अटेर की जनता को इतना ठगा गया है,विधायक बनाया किसी ओर को यहां विधायकी चलाई किसी ओर ने ही, उन्होंने कहा कि जो बसपा से प्रत्याशी बनाए गए है,हरिशंकर नरवरिया फौजी वह तो भाजपा के एजेंट है वहीं श्री कटारे ने भाजपा प्रत्याशी अरविंद सिंह भदौरिया के साथ बसपा प्रत्याशी हरिशंकर फौजी के फोटो भी दिखाए, जहाँ वह कई कार्यक्रमों में फौजी ने भाजपा प्रत्याशी के साथ शिरकत की है,तथा उन्होंने बसपा के प्रत्याशी का भाजपा के पदाधिकारी होने का सबूत भी दिया श्री कटारे ने कहा अटेर में दद्दा टैक्स से मुक्ति दिलाने के लिए आपको मुझे भरपूर आशीर्वाद देना होगा आप सभी के साथ कभी भी अन्याय हुआ तो जहाँ आपका पसीना गिरेगा वहाँ आपका भाई अपना खून गिरा देगा,वहीं श्री कटारे ने कहा कि अटेर की जनता मेरा परिवार है सदैव आपने साथ दिया है,अब आप एक बार फिर मेरा परिवार की तरह हाथ थामकर आगे बढ़ाओ फिर मैं आपका ढाल भी बनूँगा और तलवार भी बनूँगा।

15 नवंबर को हर हाल में अपने गंतव्य को रवाना हो जायें श्रृद्धालु– जिला निर्वाचन अधिकारी

दीपावली अमावस्या मेला में शामिल होने आये श्रृद्धालुओं से अपील

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग वर्मा ने विधानसभा निर्वाचन 2023 के दृष्टिगत दीपावली अमावस्या मेले में शामिल होने वाले श्रृद्धालुओं से 15 नवंबर को हर हाल में अपने गंतव्य रवाना हो जाने की अपील की है। उन्होने अपील करते हुये कहा है कि विधानसभा निर्वाचन 2023 के लिये 17 नवंबर को मतदान किया जाना है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार कोई भी व्यक्ति जो निर्वाचन वाली विधानसभा क्षेत्र का मतदाता नहीं है। मतदान

समाप्ति के 48 घंटे पूर्व निर्वाचन वाली विधानसभा क्षेत्र में नहीं रह सकता है। जिला निर्वाचन अधिकारी श्री वर्मा ने निर्वाचन आयोग के निर्देशों का पालन कराने एवं विधानसभा चित्रकूट में 10 से 14 नवंबर तक चलने वाले दीपावली अमावस्या मेला में शामिल होने आये बाहरी श्रृद्धालुओं को 15 नवंबर तक हर हाल में विधानसभा क्षेत्र छो? देने की अपील की है। ताकि विधानसभा निर्वाचन कार्यक्रम को निष्पक्ष एवं स्वच्छ वातावरण में विधि-सम्यक रुप से संपन्न कराया जा सके। उन्होने जिले के मतदाताओं को लोकतंत्र की मजबूती के लिये 17 नवंबर को मतदान करने की भी अपील की है। उल्लेखनीय है कि धर्मनगरी चित्रकूट में प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर 5 दिवसीय अमावस्या मेला आयोजित होता है। इस वर्ष विधानसभा आम निर्वाचन के चलते आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील है। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार ऐसे व्यक्ति एवं राजनैतिक पदाधिकारी जो निर्वाचन क्षेत्र के बाहर से आए हैं और जो निर्वाचन क्षेत्र के मतदाता नहीं हैं, उन्हें मतदान समाप्ति के 48 घंटे पूर्व निर्वाचन क्षेत्र में मौजूद नहीं रहना चाहिए।

3 अपराधियों के विरुद्ध बाउण्ड ओव्हर एवं एक के विरुद्ध जिला बदर की कार्यवाही

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना। जिले में शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, भय-रहित वातावरण में विधानसभा निर्वाचन 2023 के निर्वाचन कार्यक्रम को संपन्न कराने के उद्देश्य से असामाजिक तत्वों के विरुद्ध कठोर, प्रतिबंधात्मक कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अनुराग वर्मा ने जिले के 3 आदतन अपराधियों के विरुद्ध संबंधित क्षेत्र के थाना प्रभारियों को प्रतिबंधात्मक कार्यवाही एवं एक आरोपी को जिला बदर करने का आदेश जारी किया हैं। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा थाना सभापुर अंतर्गत बिरसिंहपुर निवासी सीटू उर्फ विद्याशंकर मिश्रा पिता अशोक मिश्रा उम्र 45 वर्ष, अनिल गुप्ता उर्फ पिंकी उर्फ मुस्तफा पिता छोटेलाल गुप्ता उम्र 40 वर्ष एवं थाना मझगवां अंतर्गत ग्राम तुर्रा निवासी गुड्डा उर्फ सरमन जायसवाल पिता मोतीलाल जायसवाल उम्र 38 वर्ष के विरूद्ध बाउण्ड ओव्हर कर संबंधित थाना प्रभारियों को प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने का आदेश जारी किया है। आदेश में सभी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही के आरोपियों को एक वर्ष तक माह के प्रथम सोमवार को अपनी उपस्थिति थाने में दर्ज कराने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी अनुराग वर्मा ने म.प्र. राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 के तहत थाना नागौद अंतर्गत विन्डल उर्फ रावेंद्र यादव पिता राजू यादव उम्र 33 वर्ष को एक वर्ष की अवधि के लिये जिले की सीमा और जिले से लगने वाले चतुर्दिक जिलों की सीमा से बाहर चले जाने का आदेश दिया है।

मैंने हमेशा विकास,सुरक्षा,मान– सम्मान की राजनीति की : डॉ. अरविंद सिंह भदौरिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । अटेर विधानसभा क्षेत्र के भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी डॉ. अरविंद सिंह भदौरिया ने अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंपर्क करते हुए 17 नवंबर को होने जा रहे चुनाव के लिए भाजपा को प्रचंड बहुमत के साथ जिताने के लिए मतदाताओं के समक्ष अपील की। डॉ. भदौरिया अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत भदाकुर, नाहरा ,समेदपुरा, डेला भौनपुरा ,बधपुरा ,सांकरी ,दरुआ बहाराय का पुरा

काछई मैं जनसंपर्क करते हुए कहा कि आपके विकास कार्य हमेशा करता रहूंगा जीवन भर में आपका ऋणी रहूंगा कि आपका मन और सम्मान में कोई कमी नहीं होगी हमेशा आपके सुख को दुख में खड़ा रहूंगा अटेर विधानसभा क्षेत्र में करो?ें रुपये के विकास का जिम्मा अपने सौपा था वह मैंने पूरा किया है,मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भाजपा की सरकार बनते ही अटेर की विकास के लिए कोई कमी नहीं छोड़ूंगा 17 तारीख को भाजपा को प्रचंड बहुमत के साथ जीताकर मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाएं।जनसंपर्क में शामिल जिला उपाध्यक्ष शिवराज सिंह यादव विकास शर्मा विधायक प्रतिनिधि मंडल अध्यक्ष एवं विधानसभा संयोजक शैलेंद्र पालीवाल थान सिंह भदौरिया शैलेंद्र सिंह भदौरिया राजीव सिंह भदौरिया देवेंद्र सिंह भदौरिया राय सिंह नरवरिया शैलेंद्र सिंह भदौरिया संतोष सिंह तोमर आदि लोग शामिल रहे।

कांग्रेस के घोषणा पत्र में किये गए हर वादे को निभाएंगे : फूलसिंह बरैया

मंहगाई और भृष्टाचार से त्रस्त हो चुकी जनता परिवर्तन चाह रही है:राहुल भदौरिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । मेहगांव विधानसभा में कांग्रेस वरिष्ठ नेता फूल सिंह बरैया ने कांग्रेस प्रत्याशी राहुल भदोरिया के समर्थन में आमसभा को संबोधित किया । श्री बरैया ने अपने भाषणों में कांग्रेस के घोषणा पत्र में लिखे गए वादों को दोहराते हुए कहा कि 500 रुपये में गैस सिलेंडर,हर महिला को 1500 रुपये महीना दिए जाएंगे तथा किसानों का कर्ज माफ करेंगे, 100 यूनिट बिजली का बिल माफ रहेगा और 200 यूनिट बिल हाफ रहेगा । बीजेपी सरकार ने गौशालाओ को बंद कर दिया जिस कारण आज हजारों में सड़कों पर रोज गाय मार रही और रात को किसान सो नहीं पा रहा है,अपने खेत की रखवाली कर रहा है,अगर खेतों की रखवाली करने नहीं जाता है तो फसलों का काफी नुकसान हो रहा है,अगर हमारी सरकार आई तो फिर से बंद गौशालाए चालू करेंगे और नई

गौशालाए बनवायेंगे । उन्होंने कहा कि संविधान रचयिता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने हमें वोट देने की ऐसी शक्ति दी है,जिससे हम जनता जनार्दन सरकार बनाने का फैसला करती हैं।उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी को जिताने की अपील करते हुए कहा कि आप हमारे प्रत्याशी को जिताकर विधानसभा भेजें हम क्षेत्र के विकास का वादा करते हैं। मेहंगाव कांग्रेस प्रत्याशी राहुल भदौरिया ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि महगाई और भ्रष्टचार से त्रस्त हो चुकी जनता अब परिवर्तन चाह रही है, श्री भदौरिया ने अपने उद्बोधन में आमजन के बीच विकास का वादा किया और कहा कि मैं हमेशा क्षेत्र की जनता के बीच रहूंगा । श्री भदौरिया ने जनता से वादा करते हुए कहा कि अगर जनता के आर्शीवाद से विधायक बना तो क्षेत्र में विकास कार्य तेजी से करवाऊंगा। श्री भदौरिया ने कहा कि एक तरफ वह चुनाव लड़ रहे हैं

चित्रकूट के दीपावली अमावस्या मेले में शांति एवं कानून व्यवस्था स्थापित करने

कार्यपालिक मजिस्ट्रेटों की तैनाती

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना जिले के प्रसिद्ध धर्मस्थल चित्रकूट में 10 से 14 नवंबर 2023 तक आयोजित दीपावली अमावास्या मेले में अत्यधिक संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को दृष्टिगत रखते हुये कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अनुराग वर्मा ने शांति, कानून एवं प्रशासनिक व्यवस्था बनाये रखने संपूर्ण मेला क्षेत्र को 11 जोन में विभक्त करते हुये कार्यपालिक मजिस्ट्रेटों की तैनाती की है। प्रत्येक कार्यपालिक मजिस्ट्रेट को मेला ड्यूटी के दौरान सहयोग प्रदान करने पटवारियों की भी ड्यूटी लगाई गई है। जारी आदेशानुसार 'प्रथम जोन (प्रथम मुखार बिंद)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक एसडीएम सुधीर बेक और जिला संयोजक अविनाश पांडेय, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक सीईओ जनपद एमएल प्रजापति और उपायुक्त सहकारिता अशोक कुमार शुक्ला, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक सीएमओ लालजी ताम्रकार और आरआई रामकुमार रावत, 'द्वितीय जोन (द्वितीय मुखार बिंद)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक अधीक्षक मुन्ना लाल तिवारी और उपसंचालक प्रमोद शर्मा, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक प्रभारी रोजगार अधिकारी बीडी तिवारी और आरआई अजय सिंह बघेल, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक नायब तहसीलदार राजेंद्र मांझी और परियोजना अधिकारी रविकांत शर्मा, 'तृतीय जोन (मेला कंट्रोल रुम)' में प्रातः 8 बजे से सांय 4 बजे तक नायब तहसीलदार बीरेंद्र सिंह, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक वैज्ञानिक डॉ राहुल द्विवेदी, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक आरआई सुरेंद्र तिवारी तथा 'चतुर्थ जोन (भरत घाट)' में प्रातः 8 बजे से सांय 4 बजे तक एसडीएम आरती सिंह और परियोजना अधिकारी नागेंद्र तिवारी, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक सीएमओ शैलेन्द्र सिंह और आरआई दीनबंधु प्रजापति एवं रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक प्रभारी सीडीपीओ राजेंद्र बांगरे और कार्यपालन यंत्री एलपी तिवारी की ड्यूटी कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रुप मे लगाई गई है। इसी प्रकार 'पंचम जोन (हनुमान धारा)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक प्रभारी तहसीलदार अनुराग सिंह मरावी, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक श्रम निरीक्षक हेमंत डेनियल, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक आरआई प्रबुद्ध कुमार शुक्ला, 'षष्ठम जोन (गुप्त गोदावरी)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक डिप्टी कलेक्टर गोविंद सोनी और सीएमओ पूजा द्विवेदी, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक पीओ इंद्रभूषण तिवारी और प्रभारी आरआई अंबिकाचरण त्रिपाठी, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक आरआई योगेश तिवारी, 'सातवां जोन (सती अनुसुइया)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक सीएमओ प्रतिपाल सिंह बागरी, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक आरआई विभूमितनारायण चतुर्वेदी, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक पीओ अरुणेश तिवारी, 'आठवां जोन (अस्थाई बस स्टैंड)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक सीएमओ प्रदीप दुबे, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक कार्यपालन यंत्री आरएस नट, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक पीओ सुरेंद्र सिंह की ड्यूटी लगाई गई है। जबकि 'नौवां जोन (पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक खनिज अधिकारी हरेन्द्र पाल सिंह, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक उप संचालक नारायण सिंह, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक पीओ पुनीत शर्मा, 'दसवां जोन (साक्षी गोपाल मंदिर)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक सीएमओ लखन ताम्रकार, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक सहायक संचालक सुनील मिश्रा, रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक सीएमओ शैलेन्द्र ओझा तथा 'ग्यारवां जोन (कामदवाटिका परिक्रमा)' में प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक सीएमओ सुलभ सिंह पुषाम, सायं 4 बजे से रात्रि 12 बजे तक सहायक संचालक केके शुक्ला और रात्रि 12 बजे से प्रातः 8 बजे तक सचिव सतना कृषि मंडी करुणेश तिवारी की ड्यूटी अमावस्या मेला में लगाई गई है। 'रिजर्व दल' में नायब तहसीलदार परमसुख बंसल और प्रभारी खेल अधिकारी एसपी तिवारी को रखा गया है। दीपावली मेला की 'संपूर्ण व्यवस्था' के लिये 'मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत डॉ परीक्षित झाड़े' को 'प्रभारी अधिकारी' नियुक्त किया गया है। साथ ही 'कानून संबंधी व्यवस्था' के 'प्रभारी अधिकारी ऋषि पवार (अपर कलेक्टर एवं अपर जिला दंडाधिकारी)' होंगे।

गांव का विकास और क्षेत्र से भ्रष्टाचार खत्म करना मेरी पहली प्राथमिकताः अभय

गांव गांव में मिल रहा भारी जन समर्थन, कांग्रेस प्रत्याशी के पहुंचने पर उमड़ पड़ती है भीड़

पुष्पांजली टुडे
विवेक तिवारी (भीम

रीवा। जिले की सेमरिया विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी अभय मिश्रा ने आज स्पष्ट रूप से जनता से कहा है कि अगर आपने मुझे मौका दिया तो मैं वचन देता हूं कि मेरी पहली प्राथमिकता में क्षेत्र का विकास होगा और दूसरा यहां होने वाले भ्रष्टाचार का अंत कर दूंगा। पिछले 5 साल के दौरान जनप्रतिनिधि द्वारा जो खेल किया गया है और जनता जिस प्रकार से दुखी भाव से मुझे बताती है तो मेरा मन अत्यंत द्रवित हो उठता है।विभिन्न गांव में जनसंपर्क के दौरान अपनी बात रखते हुए कांग्रेस प्रत्याशी ने कहा कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान जनप्रतिनिधि ने स्वयं और अपने लोगों के माध्यम से जमकर भ्रष्टाचार किया और कराया। विकास के लिए जो पैसा सरकार से आया उसकी जमकर दोहन किया गया। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा, केवल और केवल विकास होगा तथा भ्रष्टाचार बिल्कुल बंद होगा। भ्रष्टाचार के मामले में अगर कोई मेरा करीबी भी सामने आ रहा है तो उसे भी बक्सा नहीं जाएगा। श्री मिश्रा ने कहा कि हर गांव में यही शिकायत मिल रही है कि सड़क के लिए पैसा आया था कागज में सड़क भी बन गई है और पैसा भी खत्म हो गया है और सड़क भी नहीं बनी। किसने किया है भ्रष्टाचार , किसके इशारे पर हुआ है भ्रष्टाचार, सब पोल खुल चुकी है। बस कार्यवाही होने की देर है , इसके लिए आपका आशीर्वाद मुझे चाहिए। श्री मिश्रा ने कहा कि आगामी 17 नवंबर को मतदान है और कांग्रेस ने यह वचन दिया है कि अगले 5 साल में मध्य प्रदेश में केवल खुशहाली का दौर रहेगा। कमलनाथ के हाथ को मजबूत करने के लिए जरूरी यह है कि आपका आशीर्वाद मुझे मिले। शुक्रवार 10 नवंबर को प्रत्याशी अभय मिश्रा ने केमार , जेरुका हरिजन बस्ती , बिहरा , कुल्लू, बरवाह , धवैया , छीपटा, दादर , पथरगढ़ी आदि गांव में जनसंपर्क करते हुए लोगों से जन समर्थन मांगा। वहीं स्थानीय जनता ने भी आश्वस्त किया है कि वह भ्रष्टाचार और आतंक की लड़ाई के खात्मे के लिए सब साथ हैं।

अपर कलेक्टर एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने जिले के सीमावर्ती चेक पोस्ट का किया निरीक्षण

पुष्पांजली टुडे

रीवा। विधानसभा निर्वाचन 2023 को शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष कराने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल तथा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के निर्देशन में जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सघन जांच अभियान संचालित किया जा रहा है।अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर एवं विवेक लाल ने आज जिले के सीमावर्ती चेक पोस्ट नाकों का निरीक्षण किया तथा वहां की जा रही जांच आदि की विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने जवा, चाकघाट मनगवां, त्योंथर के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया तथा पुलिस बल द्वारा की गई अवैध जप्ती की कार्यवाही के बारे में पूछताछ की। इस दौरान उन्हें बताया गया कि प्रशासन एवं पुलिस की संयुक्त कार्यवाही में अवैध शराब, गांजा, नगदी आदि की जांच कर जप्ती की कार्यवाही की जा रही है। जांच के लिए लगाए गए विभिन्न दलों द्वारा लगातार भ्रमण कर शांतिपूर्ण मतदान के उद्देश्य से कार्यवाहियां की जा रही हैं। निरीक्षण के दौरान एसडीओपी उदित मिश्रा, टीआई उषा सिंह, एसआई संजीव शर्मा, एसआई शैल यादव, कांस्टेबल प्रदीप मिश्रा आदि शामिल रहे।

सशस्त्र बलों तथा पुलिस ने जिले भर में किया फ्लैग मार्च

पुष्पांजली टुडे

रीवा। विधानसभा चुनाव के लिए रीवा एवं मऊगंज जिले के सभी आठ विधानसभा क्षेत्रों में 17 नवम्बर को मतदान कराया जाएगा। मतदान शांतिपूर्वक संपन्न कराने के लिए प्रशासन द्वारा आदतन अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है। अपराधियों में भय पैदा करने तथा आमजनता के मन में विश्वास बनाए रखने के लिए जिले भर में सशस्त्र बलों एवं पुलिस बलों ने फ्लैग मार्च किया। थाना शाहपुर में थाना प्रभारी जगदीश सिंह ठाकुर के नेतृत्व में पुलिस बल तथा आईटीबीपी के सुरक्षा बलों ने फ्लैग मार्च निकाला। फ्लैग मार्च शाहपुर के साथ-साथ ग्राम बिछरहटा, खटकरी, बरांव, पहा?ी, गौरी तथा पतुलखी में निकाला गया। फ्लैग मार्च के दौरान असामाजिक तत्वों की धरपक? भी की गई। इसी तरह थाना त्योंथर, थाना सोहागी तथा थाना चाकघाट के विभिन्न क्षेत्रों में सशस्त्र बलों तथा पुलिस बलों ने फ्लैग मार्च किया।

शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए 4617 असामाजिक तत्वों पर हुई कार्यवाही

कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 99 आदतन अपराधी किए गए जिला बदर

पुष्पांजली टुडे

रीवा। विधानसभा चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए गत दो महीनों से लगातार कार्यवाही की जा रही है। असामाजिक तत्वों और आदतन अपराधियों के विरूद्ध जिला बदर करने तथा प्रतिबंधात्मक कार्यवाहियाँ की गई हैं। इस संबंध में अपर जिला दण्डाधिकारी शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि 9 अक्टूबर से अब तक 99 आदतन अपराधियों को जिला बदर किया गया है। साथ ही 4617 असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कार्यवाही की गई है। इनमें 4023 असामाजिक तत्वों के विरूद्ध धारा 107-16 जाप्ता फौजदारी के तहत कार्यवाही की गई है। इनके विरूद्ध 2995 प्रकरण दर्ज किए गए हैं। इनमें से 809 असामाजिक तत्वों को बाउण्ड ओवर कराया गया है। धारा 110 जाप्ता फौजदारी के तहत 308 प्रकरण दर्ज करके 308 आरोपियों पर कार्यवाही की गई। इनमें से 28 आरोपियों को बाउण्ड ओवर कराया गया है। धारा 151 जाप्ता फौजदारी के तहत 279 प्रकरण दर्ज करके 286 आरोपियों पर कार्यवाही की गई। इनमें से 91 असामाजिक तत्वों को बाउण्ड ओवर कराया गया है। अवैध शस्त्र के संबंध में 50 आरोपियों के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर कुल 50 अवैध हथियार जप्त किए गए हैं। इस अवधि में पुलिस द्वारा 480 स्थायी फरारी वारंटों तथा 809 गिरफ्तारी वारंटों की तामीली कराई गई।

पुलिस विभाग द्वारा लगातार की जा रही जब्ती की कार्यवाही

पुलिस द्वारा 14.57 लाख रुपए की नगदी तथा 53 हथियार किए गए जब्त

पुष्पांजली टुडे

रीवा। विधानसभा चुनाव के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस द्वारा एक ओर असामाजिक तत्वों तथा अपराधियों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है। वहीं दूसरी ओर वाहनों की सघन जाँच भी की जा रही है। विधानसभा चुनाव की आदर्श आचरण संहिता लागू होने के बाद से अब तक पुलिस द्वारा 14 लाख 57 हजार 999 रुपए की जब्ती की कार्यवाही की गई है। जिले में बनाए गए विभिन्न जाँच नाकों तथा फ्लाइंग स्क्वाड दल द्वारा संदिग्ध वाहनों और व्यक्तियों की जाँच के बाद जब्ती की कार्यवाही की गई है। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने

बताया कि 9 अक्टूबर से अब तक पुलिस द्वारा 51 घातक हथियार तथा दो अग्नेयास्त्र जब्त किए गए हैं। इसी अवधि में जाँच के दौरान चार लाख 82 हजार रुपए मूल्य का 47.85 किलोग्राम अवैध रूप से परिवहन किया जा रहा गाँजा जब्त किया गया। पुलिस ने वाहनों की जाँच के दौरान 342.4 लीटर कोडीन नशीला सिरप भी बरामद कर आरोपियों को जेल भेजा। जब्त सिरप अनुमानित कीमत 6 लाख 69 हजार 227 रुपए है। इस अवधि में विधानसभा क्षेत्र रीवा में 69 नशीली टेबलेट जब्त की गई जिनकी कीमत 27964 रुपए है। अवैध नशीले सिरप के कारोबार लिप्त 22 आरोपियों को जेल भेजा गया है।

आबकारी विभाग ने अब तक जब्त की 36.82 लाख रुपए की अवैध शराब

पुष्पांजली टुडे

रीवा। विधानसभा निर्वाचन में कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा आवंछित गतिविधियों को रोकने के लिए लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसके लिए जिले भर में नाके स्थापित करके वाहनों की जाँच की जा रही है। आबकारी विभाग द्वारा वाहनों की जाँच तथा अवैध शराब के संबंध में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कार्यवाही करके निर्वाचन की आचार संहिता लगने की तिथि 9 अक्टूबर से अब तक 169 प्रकरण दर्ज किए गए हैं। इस संबंध में सहायक आबकारी आयुक्त अनिल जैन ने बताया कि अब तक 1016.17 लीटर अवैध शराब तथा 23 हजार 300 किलोग्राम महुआ लाहन आबकारी विभाग द्वारा जब्त किया गया है। इसकी कुल कीमत 25 लाख 97 हजार 578 रुपए है। लाइसेंसशुदा दुकानों से भी शराब की बिक्री पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। आबकारी विभाग के दल पुलिस विभाग के सहयोग से लगातार जाँच करने एवं अवैध शराब की जब्ती की कार्यवाही कर रहे हैं। इसी अवधि में पुलिस विभाग द्वारा भी लगातार कार्यवाही करके कुल 10 लाख 85 हजार 215 रुपए की अवैध शराब तथा महुआ लाहन जब्त किया गया है। इसमें 3534 लीटर अवैध शराब तथा 3075 लीटर महुआ लाहन जब्त किया गया है। पुलिस विभाग द्वारा भी लगातार कार्यवाही की जा रही है।

कलेक्टर ने 8 आदतन अपराधियों को किया जिला बदर

पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने 8 आदतन अपराधियों को जिला बदर के आदेश दिए हैं। विधानसभा चुनाव के समय कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा आमजनता की सुरक्षा को ध्यान में रखकर यह कार्यवाही की गई है। कलेक्टर ने मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 ख के तहत एक वर्ष के लिए जिला बदर के आदेश दिए हैं। इन 8 आदतन अपराधियों द्वारा लगातार आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहने, मारपीट, गुण्डागर्दी, गाली गलौज, अवैध शस्त्रों के उपयोग, लोगों को डराने-धमकाने तथा अन्य आपराधिक कृत्यों के कारण यह कार्यवाही की गई है। इन अपराधियों के विरूद्ध विभिन्न थाना क्षेत्रों में धारा 294, धारा 323, धारा 506, धारा 341, धारा 323, धारा 34, 110 जाप्ता फौजदारी तथा अन्य धाराओं में आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। बार-बार समझाइश के बावजूद इन अपराधियों के आचरण में किसी तरह का सुधार नहीं हो रहा है। इनके कृत्यों से जनमानस में आतंक एवं भय व्याप्त है। इनका स्वच्छंद रहना आमजनता के लिए हितकर नहीं है जिसके कारण कलेक्टर द्वारा पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के प्रतिवेदन के आधार पर जिला बदर की कार्यवाही की गई है। इन सभी अवधि के लिए रीवा जिले की राजस्व सीमाओं सहित मऊगंज, सिंगरौली, सीधी तथा सतना जिले

आदतन अपराधियों को एक वर्ष की की सीमाओं से बाहर रहने के आदेश दिए गए हैं। सक्षम अधिकारी के आदेश के बाद ही ये रीवा जिले की सीमाओं में प्रवेश कर सकेंगे। आदेश का उल्लंघन करने पर मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 14 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी। जारी अलग-अलग आदेशों के अनुसार कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी ने रोशन गुप्ता उर्फ रोशन राक्स पिता विकास गुप्ता आयु 22 वर्ष निवासी अमहिया, शिवम सिंह उर्फ दिव्यराज सिंह परिहार पिता शिवराज सिंह परिहार आयु 24 वर्ष निवासी ग्राम सिरखिनी, सचिन सिंह बघेल उर्फ छोटू पिता संतोष सिंह बघेल आयु 29 वर्ष निवासी ग्राम महसुआ तथा शनि सिंह उर्फ जय सिंह पिता दद्दू सिंह उर्फ वीरेन्द्र सिंह निवासी रायपुर कर्चुलियान को जिला बदर के आदेश दिए हैं। कलेक्टर ने रीतेश साकेत पिता सुशील साकेत आयु 24 वर्ष निवासी गल्ला मंडी रीवा, चिराग खान पिता फजलू खान आयु 24 वर्ष निवासी अमहिया रीवा तथा धनेन्द्र गौतम पिता तुलसीदास गौतम आयु 42 वर्ष निवासी ग्राम लूक को एक वर्ष के लिए जिला बदर के आदेश दिए हैं। कलेक्टर ने प्रभाकर उर्फ गुड्डू सिंह पिता जनार्दन सिंह आयु 46 वर्ष निवासी ग्राम ग? को एक वर्ष की अवधि के लिए प्रत्येक माह में 15 दिन थाने में हाजिरी देने के आदेश दिए हैं। आदेश का उल्लंघन करने पर दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी।

देश भर में विख्यात है रतलाम के महालक्ष्मी मंदिर का श्रंगार, दिवाली में श्रद्दालुओं के दिए नोट, सोने-चांदी के आभूषणों से सजावट

रतलाम। शहर के माणकचौक स्थित प्रसिद्ध महालक्ष्मी मंदिर में भक्तों द्वारा दी गई सामग्री से सजावट के बाद शुक्रवार सुबह ब्रह्म मुहूर्त में मंदिर के पट खोले गए। सुबह से ही बड़ी संख्या में भक्त मंदिर में दर्शन करने पहुंचे और रात तक यही क्रम बना रहा। हर साल पांच दिवसीय दीपोत्सव में नोट, सोने-चांदी के जेवर, हीरे-मोती आदि से होने वाली सजावट को लेकर मंदिर में दर्शन के लिए देशभर से श्रद्धालु आते हैं। धनतेरस से शुरू हुए विशेष श्रृंगार के दर्शन भाई दूज तक लगातार किए जा सकेंगे। इसके बाद श्रद्धालुओं को सामग्री वापस देना शुरू की जाएगी। शुभ मुहूर्त में मंदिर से कुबेर पोटली का वितरण भी किया जाएगा।मालूम हो कि महालक्ष्मी मंदिर में भक्त अपनी इच्छा से नगदी, सोने-चांदी के जेवर, सिल्ली सहित हीरे-मोती आदि सामग्री श्रृंगार के लिए देते हैं। इस सामग्री से होने वाले विशेष श्रृंगार को लेकर मंदिर देश भर में विख्यात है। रतलाम के अलावा बांसवाड़ा, दाहोद, पीथमपुर सहित अन्य जिलों से भी भक्तों ने सामग्री मंदिर पर दी है। दी जाने वाली सामग्री को रजिस्टर में दर्ज कर श्रद्धालु को टोकन दिया जाता है, इसी टोकन से सामग्री वापस मिल जाती है।पांच दिवसीय दीपोत्सव के दौरान रहने वाली सजावट को देखने भी बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। सुरक्षा के लिए मंदिर समिति व पुलिस प्रशासन भी सभी जरूरी इंतजाम करता है। इस बार जेवर आदि कम आए हैं, जबकि नगदी में 20 व 50 के नोट ज्यादा हैं। कोरोना काल से दर्शन मंदिर के बाहर से करवाए जा रहे हैं। इससे पहले मंदिर के अंदर गर्भगृह तक जाकर दर्शन कर सकते थे।मंदिर के संजय पुजारी ने बताया कि शुक्रवार सुबह मंदिर के पट खोलने के बाद से दर्शन जारी हैं। कुबेर पोटली के लिए अलग से कोई दिन तय नहीं किया है। श्रृंगार व सजावट पर एक नजरभक्तों द्वारा दी गई

कांग्रेस प्रत्याशी इंजी. राजेन्द्र शर्मा का तूफानी जनसम्पर्क

पुष्पांजली टुडे
विवेक तिवारी (भीम)

रीवा। कांग्रेस प्रत्याशी इंजी. राजेन्द्र शर्मा का तूफानी जनसम्पर्क एवं भ्रमण कार्यक्रम जारी हैं। इंजी. राजेन्द्र शर्मा ने वार्ड नं. 15 लैण्डमार्क के सामने, नहर चर्च के पास, उपाध्याय टोला रतहरी, बंसल बस्ती, रतहरी पोखरी मंदिर के पास, शारदापुरम समान, सिलपरी, सिलपरा, डकवार, वार्ड नं. 42, बिछिया तकिया, वार्ड नं. 41, एस.ए.एफ. चौराहा महामृत्युंजय काम्पलेक्स के पास, वार्ड नं. 41, चुनहाई कुआं के आगे, वार्ड नं. 45, मैन चौराहा कुठुलिया, कटरा हनुमान मंदिर के पास, उपस्थित जन समूह से जन संवाद स्थापित किया। इस अवसर पर लोगो ने बताया कि हमारे वार्ड व पंचायत में मलयुक्त गंदा पानी आ रहा हैं। नालियां बज-बजा रही हैं, स?ाध के कारण मोहल्लों में रहना दूभर हैं। लोगों की बातों को इंजी. राजेन्द्र शर्मा ने ध्यान पूर्वक सुन कर कहा कि भाजपाई विकास का केवल ढिंढौरा पीटने का हैं, लेकिन जनता की दुर्दशा पर उनका कोई ध्यान नही हैं। 20 वर्षो के शासनकाल में जिस सरकार ने मीठा पानी तक उपलब्ध नहीं करा सकी, लोगों की मूलभूत समस्याओं को हल नहीं कर सकी उस सरकार को अब सबक सिखाने का समय आ गया हैं। और उसका एक ही उपाय है कि 17 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार को भारी मतों से विजयी बनायें। श्री शर्मा ने कहा कि मैं भी इसी शहर का निवासी हूं और नगर एवं ग्रामों की दुर्दशा देखकर मुझे अत्यंत पी?ा होती हैं। मैने संकल्प लिया है कि यदि आप लोगों का आर्शीवाद मुझे मिला तो आम जन मानस की मूलभूत समस्याओं का निराकरण जल्द से जल्द करने का प्रयास करूंगा। इंजी. राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि प्रदेश में बनने वाली कमलनाथ जी की सरकार के किसान हितैषी, महिला

हितैषी, छात्र हितैषी, युवा हितैषी, कर्मचारी हितैषी, वचन पत्र के महत्वपूर्ण बिदुंओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सरकार बनते ही इन सारें वचनों को तत्काल पूरा करने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने जनमानस को आगाह किया कि भाजपाईयों के कुप्रचार से सावधान रहें। अक्सर हमारी कांग्रेस पार्टी पर आरोप लगाते है कि 15 महीने की कांग्रेस सरकार ने दिये गये वचनों को पूरा नही किया, उन्होने उपस्थित जनसमुदायें से प्रश्न किया के क्या 27 लाख किसानों का कर्ज माफ नही हुआ, क्या समाजिक सुरक्षा पेंशन 300 से ब?ाकर 600 रूपये नही की गयी। क्या कन्या विवाह 51 हजार रूपये का भुगतान नही किया गया आदि-आदि, उपस्थित जनसमुदाय ने हाथों को ऊपर उठाकर कहा कि इन सबको लागू कर कांग्रेस पार्टी ने अपना वादा पूरा किया हैं। उन्होंने कहा कि भाजपाई जब इस प्रकार का आरोप लगाये तो आप सब उन्हें करारा जवाब दें। श्री शर्मा ने जोर देकर कहा कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी भारी बहुमत से जीत कर सरकार बना रही है, इसलिए आपको कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी को भारी बहुमत से विजयी बनाकर रीवा विधानसभा प्रतिनिधित्व देने का आशीर्वाद प्रदान करें।

आज सिलपरा में जनसंपर्क के दौरान मुन्ना सिंह, हीरा सिंह, रितेश सिंह, शक्ति सिंह, प्रमोद यादव, सुनील साकेत, बृजलाल चतुर्वेदी, परीक्षित चतुर्वेदी, पवन पटेल, बाबूलाल कोल, सुदामा साकेत, लखन साहू, पप्पू कोटवार, भाईलाल दहिया, भक्ति तिवारी, रमेश समदरिया ने इंजी. राजेन्द्र शर्मा के हांथो कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। भाजपा नेता पूर्व जिला पंचायत सदस्य इंद्रमणि पटेल व पूर्व जिला पंचायत सदस्य बसपा नेता मंजूलता पटेल ने जिला कांग्रेस कार्यालय रीवा में संगठन प्रभारी प्रताप भानु शर्मा के हांथों कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ली।

संपादकीय

अनावश्यक टकराव

हाल के वर्षों में देश के कई राज्यों में राज्य सरकारों व राज्यपालों के बीच गहरे टकराव के मामले प्रकाश में आए हैं। विडंबना यह है कि ये मामले उन राज्यों में सामने आए जहां गैर–राजग सरकारें कार्यरत हैं। महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक व तमिलनाडु के बाद हालिया विवाद पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार व पंजाब के राज्यपाल के बीच है। यह विवाद इतना बढ़ा कि मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। जिस पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि राज्यपालों को आत्मावलोकन करना चाहिए। जाहिर है विसंगतियों के हालात के बावजूद सुप्रीम कोर्ट ने इस गरिमामय संवैधानिक पद के अनुरूप गरिमामय टिप्पणी ही की है। कोर्ट का कहना है कि ऐसे मामले अदालत में पहुंचें उससे पहले राज्यपाल को मामले में कार्रवाई करनी चाहिए। पंजाब में लंबे समय से भगवंत मान सरकार व राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित के बीच कई मुद्दों को लेकर टकराव चला आ रहा था। दरअसल, राज्यपाल ने तीन धन विधेयकों को मंजूरी देने से मना कर दिया था। हालांकि, बाद में एक नवंबर को दो विधेयकों को मंजूरी दे दी थी। इससे पहले भी राज्यपाल ने पिछले महीने बुलाए गये पंजाब विधानसभा के सत्र को अवैध तक बता दिया था। इस मामले में शीर्ष अदालत में मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि राज्यपालों को मामला कोर्ट आने से पहले ही कार्रवाई करनी चाहिए। यह परिपाटी खत्म होनी चाहिए कि मामला सुप्रीम कोर्ट आने पर राज्यपाल कार्रवाई करेंगे। यही वजह है कि शीर्ष अदालत ने राज्यपालों को आत्मावलोकन की जरूरत बताते हुए नसीहत दी कि उन्हें पता होना चाहिए कि वे जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि नहीं हैं। जाहिर है कि कोर्ट का सीधा अभिप्रायरू है कि माननीय कहे जाने वाले राज्यपाल पद की मर्यादा के अनुरूप ही व्यवहार करें। विडंबना ही है कि हाल के वर्षों में विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्यों में राज्यपाल केंद्र में सत्तारूढ़ दल के प्रतिनिधि के तौर पर काम करते देखे गए हैं। निस्संदेह, यह स्वस्थ लोकतंत्र के लिये विडंबना ही कही जाएगी कि राज्यपाल किसी राज्य सरकार के कार्यों में बाधा डालें व कैबिनेट के फैसलों को अनुमति देने में आनाकानी करें। राज्यपाल का काम किसी भी राज्य को किसी भी तरह के संवैधानिक संकट से ही बचाना होता है। वे राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के रूप में संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप कार्य करने के लिये नियुक्त किये जाते हैं ताकि राज्य के विकास के कार्य सुचारू रूप से चलाए जा सकें। मगर यदि वे सरकार बनाने व गिराने के खेल में शामिल होंगे तो निश्चित रूप से राज्यपाल के पद को आंच आएगी। महाराष्ट्र में राजनीतिक विद्रूपताओं के चलते उत्पन्न अस्थिरता के दौर में राज्यपाल की भूमिका को लेकर तीखे सवाल उठे और मामला शीर्ष अदालत तक भी पहुंचा था। ऐसा ही टकराव पश्चिम बंगाल में ममता सरकार के शासन के दौरान भी नजर आया था। विडंबना यही है कि राज्यपाल के पद पर समाज के विद्वानों व प्रतिष्ठित व्यक्तियों को नियुक्त करने के बजाय रिटायर राजनेताओं को बैठाने का खेल दशकों से जारी है। इस खेल में भाजपा से लेकर कांग्रेस तक कभी पीछे नहीं रहे। जिसके चलते वे पद पर बैठते ही अपने पर 'कृपा करने वाले दल' की निष्ठाओं को निभाने के लिये संवैधानिक सीमाओं का अतिक्रमण करने लगते हैं। फिर चुनी हुई सरकार से टकराव की खबरें सूचना माध्यमों में तैरने लगती हैं। निश्चित रूप से इस तरह की घटनाएं किसी भी लोकतंत्र के लिये शुभ संकेत नहीं कही जा सकतीं। वहीं दूसरी ओर पंजाब के राज्यपाल की ओर से शीर्ष अदालत में उपस्थित सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की दलील थी कि राज्यपाल ने उनके पास भेजे गए विधेयकों पर कार्रवाई की थी। साथ ही यह भी कि पंजाब सरकार द्वारा दायर याचिका एक अनावश्यक मुकदमा है। बहरहाल, राज्यों व केंद्र सरकारों के मध्य एक पुल का काम करने वाले राज्यपाल को राज्य के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही जनता द्वारा चुनी गई सरकार द्वारा उठाये गये कदमों को संबल देना चाहिए। भारतीय लोकतंत्र राज्यपालों से नीर–क्षीर विवेक के साथ दायित्व निभाने की अपेक्षा करता है।

जिन आंकड़ों पर नीतीश कुमार को शर्मिंदा होना चाहिए, उसे गर्व के साथ पेश कर रही है सरकार

संतोष पाठक

बिहार की दयनीय हालत का अंदाजा इससे लगा सकते हैं कि जिस रिपोर्ट पर वहां के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, वहां के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव एवं उनके पिता लालू यादव और कुछ हद तक विपक्षी भाजपा को भी शर्मिंदा होना चाहिए।

बिहार की जेडीयू–आरजेडी गठबंधन सरकार ने मंगलवार को बिहार विधानसभा में जातिगत जनगणना से जुड़े आंकड़ों को पेश कर दिया। सरकार ने इन आंकड़ों में राज्य में आबादी की शैक्षणिक स्थिति के बारे में जानकारी दी है। यह भी बताया कि राज्य में किस जाति में कितने प्रतिशत लोग गरीब हैं। किस जाति के कितने प्रतिशत लोग शिक्षित हैं। विपक्षी दलों के हंगामा के बीच जिस अंदाज में बिहार सरकार ने इस रिपोर्ट को विधानसभा में पेश किया उससे कई सवाल खड़े हो रहे हैं। बिहार शायद देश का इकलौता ऐसा अनोखा राज्य है जिस राज्य में कोई भी राजनीतिक दल अपने आप को बिहार की दुर्दशा के पाप से अलग नहीं रख सकता है। बिहार की दयनीय हालत का अंदाजा इससे लगा सकते हैं कि जिस रिपोर्ट पर वहां के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, वहां के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव एवं उनके पिता लालू यादव और कुछ हद तक विपक्षी भाजपा को भी शर्मिंदा होना चाहिए। उस रिपोर्ट को नीतीश सरकार ने गर्व के साथ सदन के अंदर पेश कर दिया। बिहार में कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर 1990 में भाजपा के समर्थन से लालू यादव बिहार के मुख्यमंत्री बने। 1990 में नीतीश कुमार लालू यादव के साथ थे। राबड़ी देवी के भाइयों के बढ़ते प्रभाव और नीतीश की मौजूदगी में तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू यादव द्वारा राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह के साथ किए गए व्यवहार के बाद नीतीश कुमार ने लालू यादव से अलग होकर अपनी पार्टी बनाई। भाजपा के साथ मिलकर लड़ते रहे। और फिर फाइनली 15 साल बाद वर्ष 2005 में नीतीश कुमार, लालू परिवार (राबड़ी देवी) को बिहार की सत्ता से हटा कर बिहार के मुख्यमंत्री बने। इसके बाद नीतीश कुमार लगातार 8 साल तक भाजपा के समर्थन से मुख्यमंत्री रहे। भाजपा ने सिर्फ समर्थन ही नहीं दिया बल्कि सरकार में शामिल भी रही। नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय फलक पर आने के बाद नीतीश कुमार कभी भाजपा के साथ तो कभी लालू यादव के साथ मिलकर सरकार बनाते रहे। नीतीश कुमार के उपमुख्यमंत्री और मंत्री तो बदलते रहे लेकिन मुख्यमंत्री पद नीतीश कुमार के पास ही रहा। पहले लालू यादव फिर उनकी पत्नी और फिर नीतीश कुमार, ये तीनों मिलकर 1990 के बाद से बिहार पर राज कर रहे हैं, यानी पिछले 33 वर्षों से बिहार के भाग्य विधाता बने हुए हैं और उसके बाद भी बिहार की हालत कितनी दयनीय हो गए हैं, यह इन्ही की सरकार द्वारा विधानसभा में पेश किए गए आंकड़े बताते हैं। जरा इन आंकड़ों पर गौर कीजिए। बिहार सरकार द्वारा पेश किए गए आंकड़े के मुताबिक राज्य में 32.1

फीसदी लोग ऐसे हैं जो कभी स्कूल ही नहीं गए हैं। बिहार की 22.67 आबादी ने सिर्फ पहली से पांचवी तक की शिक्षा हासिल की है। कक्षा 11 से 12 तक पढ़ने वाले लोगों का आंकड़ा सिर्फ 9.19 फीसदी है और बिहार में ग्रेजुएट तक कि पढ़ाई करने वाले लोग सिर्फ 7 फीसदी ही है। सामान्य वर्ग की बात तो छोड़ ही दीजिए लेकिन जिस धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के नाम पर लालू–नीतीश पिछले 33 वर्षों से बिहार पर राज कर रहे हैं उस बिहार में मुसलमानों की बात करें तो 25. 84 फीसदी शेख गरीब है। पठान में 22.2 फीसदी और सैयद में 17.61 फीसदी परिवार अभी भी गरीब है। सामाजिक न्याय के नाम पर मसीहा बनने वाले लालू/नीतीश के 33 वर्षों के राज के बावजूद 29.87 फीसदी तेली, 34.56 फीसदी मल्लाह, 32.99 फीसदी कानू, 34.75 फीसदी धानुक, 35.88 फीसदी नोनिया,38.37 फीसदी नाई परिवार गरीब है। किसी भी राज्य पर 33 वर्षों तक राज करने वाले राजनीतिक दलों के लिए यह आंकड़ा अपने आप में काफी शर्मनाक है कि आज भी बिहार में सामान्य वर्ग में गरीब परिवारों की संख्या 25.09 फीसदी है। आरक्षण का लाभ हासिल करने के बावजूद, पिछड़ा वर्ग के तहत आने वाले लोगों में 33.16 फीसदी परिवार गरीब हैं तो वहीं अत्यंत पिछड़ा से ताल्लुक रखने वाले 33.58 फीसदी परिवार गरीब हैं। अनुसूचित जाति में 42.93 फीसदी गरीब परिवार हैं तो वहीं अनुसूचित जनजाति में 42.70 फीसदी परिवार गरीब है। बिहार की इस हालत के लिए निश्चित तौर पर बिहार में राज करने वाले नेता तो जिम्मेदार हैं ही लेकिन इसके साथ–साथ बिहार के मतदाता भी कम जिम्मेदार नहीं है क्योंकि इस बुरी हालत के बावजूद बिहार के हुक्मरान बड़े गर्व के साथ इस रिपोर्ट को विधानसभा में पेश कर रहे हैं और आरक्षण का लॉलीपॉप देकर एक बार फिर से सामाजिक न्याय के नाम पर दलित, पिछड़े और अत्यंत पिछड़े वर्ग से आने वाली जातियों का मसीहा बनने की कोशिश कर रहे हैं और जनता इन्हें मसीहा बना भी देगी। कोई इनसे सवाल नहीं पूछेगा कि बिहार की इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार कौन है? आरक्षण के बाद भी बिहार के अनुसूचित जाति और ओबीसी के समाज में इतनी ज्यादा गरीबी क्यों है? आखिर इन तक आरक्षण का लाभ नहीं पहुंच पाने के लिए जिम्मेदार कौन है?

नरसंहार के एक महीने

इजरायल और हमास के बीच छिड़ी जंग को पूरे एक महीने हो गए हैं। पिछले महीने यानी 7 अक्टूबर को हमास ने इजरायल पर हमला किया था और इसके बाद इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बिना देर किए युद्ध का शंखनाद कर दिया था। उन्होंने अपनी प्रशासनिक और खुफिया असफलता के लिए इजरायल के लोगों से माफी मांगना जरूरी नहीं समझा, न ही उन्होंने इन सवालों की परवाह की कि इजरायली खुफिया एजेंसी मोसाद इस हमले की जानकारी क्यों नहीं जुटा पाई, किस तरह हमास इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने इजरायल पर भीषण हमला बोल दिया। नेतन्याहू इन सवालों की पड़ताल करने के लिए पहले वक्त निकालते, तो शायद ऐसा नरसंहार नहीं होता, जो इस वक्त हो रहा है। तब शायद हमास के असली इरादे पता चलते और ये भी मालूम होता कि आखिर हमास ने इतनी ताकत और दुस्साहस किसके बूते जुटा लिया। लेकिन शायद नेतन्याहू को युद्ध के मैदान में उतरने की हड़बड़ी थी ताकि हमास के बहाने फिलिस्तीनियों को पूरी तरह खदेड़ कर अपना कब्जा स्थायी कर लिया जाए। जिस हमास को खत्म करने की कसम खाकर नेतन्याहू ने युद्ध शुरु किया, वो अब भी बरकरार है। शायद हमास का अमृतकुंड किसी इजरायली बंकर में ही छिपा हो और इसलिए वो खत्म नहीं हो पा रहा है। लेकिन उसके नाम पर अब तक 10 हजार से अधिक फिलिस्तीन मारे जा चुके हैं। इनमें 6 हजार से अधिक बच्चे हैं। इन बच्चों में भी बहुत से ऐसे हैं, जिन्होंने अपने जीवन का एक साल भी पूरा नहीं किया, कुछ बच्चों को तो मां के पेट में ही इजरायल ने खत्म कर दिया, मानो उन अजन्मी संतानों में हमास का आतंकी रूप इजरायल को नजर आता है। खून, धूल, बारूद की गंध से लिपटे, रोते–बिलखते, डर से कांपते बच्चों की तस्वीरें और वीडियो देखकर किसी भी सामान्य इंसान की रूह कांप जाए। लेकिन युद्धोन्माद में कोई सामान्य कहां रह पाता है। इजरायली सैनिक अपने आका का हुक्म बजा रहे हैं और इजरायल अपने आका अमेरिका की फरमाबरदारी कर रहा है। बिना इस बात की परवाह किए कि उसके हाथों में इतना खून लग चुका है, जिसके दाग सदियों तक बरकरार रहेंगे। आज इजरायल ने इतने फिलिस्तीनी नागरिकों को मारा, जिनमें इतने बच्चे, इतनी महिलाएं, इतने पत्रकार, इतने सैनिक, इतने डॉक्टर हैं, इजरायल ने आज अस्पताल को तबाह किया, आज राहत शिविर पर बम बरसाए, आज गजा पट्टी तक पहुंचने वाली बिजली, पानी की आपूर्ति रोक दी, आज संचार के साधनों को खत्म कर दिया, ऐसी ही खबरें रोजाना महीने भर से लगातार आ रही हैं। और इन खबरों को देखकर भी अगर हम सामान्य बने हुए हैं, तो फिर ये तय है कि हम मनुष्य कहलाने का हक खो चुके हैं। बताया जा रहा है कि फिलिस्तीनियों को औसतन दिन में ब्रेड की दो स्लाइस और थोड़े से पानी में गुजारा करना पड़ रहा है। बहुतों को ये भी नसीब नहीं हो रहा है। निश्चित ही अमेरिका, इजरायल और इन देशों का साथ देने वाले तमाम सत्ताधीश आला दर्जे की संवेदनहीनता और क्रूरता दिखा रहे हैं। जिन लोगों को मासूमों की मौत, भूख–प्यास, बीमारी देखकर कोई फर्क नहीं पड़ रहा, जो खून की नदियों से धरती को मैला करने में लगे हुए हैं, क्या उन लोगों से न्याय और लोकतंत्र की रक्षा की उम्मीद की जा सकती है। किस तरह से ये तमाम शासनाध्यक्ष दुनिया से आतंकवाद मिटाकर शांति स्थापना का दावा कर सकते हैं, जबकि खुद इनके कृत्य किसी आतंकवाद से कम नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ को भी अमेरिका, इजरायल और उनका साथ देने वाले तमाम देशों ने बेमानी बना दिया है। संरा महासचिव एंटोनियो गुटेरेस बार–बार शांति की अपील कर रहे हैं। मानवीय आधार पर युद्धविराम की बातें कर रहे हैं। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी तमाम देशों में लगातार आम जनता फिलिस्तीनियों के लिए आवाज उठा रही है। खुद इजरायल की जनता नेतन्याहू की युद्धनीति का विरोध करते हुए सड़कों पर उतर आई है। लेकिन फिर भी इजरायल युद्धविराम के लिए तैयार नहीं है और उधर जो बाइडेन कह रहे हैं कि पूरे युद्धविराम की जगह मानवीय जरूरत के लिए छोटे विराम लिए जाएं। इस तरह के बयानों से अमेरिका की

असली नीयत समझ आ जाती है। मानवीय जरूरत तो यही है कि किसी भी हाल में युद्ध तुरंत बंद हो और नरसंहार पर रोक लगे। छोटे विराम जैसा कोई विकल्प होना ही नहीं चाहिए। मगर युद्ध रुका तो नेतन्याहू के फिलिस्तीन पर कब्जे के मंसूबे धरे रह जाएंगे। इसलिए अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इजरायल युद्ध किए जा रहा है और अमेरिका अपनी मदद जारी रखे हुए है। दुनिया भर के कई राजनेता अपनी सरकारों से अलग राय रखते हुए इजरायल को आतंकी राष्ट्र घोषित करने की मांग उठा चुके हैं। नेतन्याहू पर युद्ध अपराधों का मुकदमा चलाने की मांगे हो रही हैं। यह देखना दुखद है कि इंसानियत के इस मुश्किल वक्त में भारत का नेतृत्व करने वाली मोदी सरकार ढुलमुल रवैया अपनाए हुए है। सोमवार को ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से फोन पर बातचीत की और इसमें दोनों देशों के संबंधों पर चर्चा के साथ ही फिलिस्तीन के हालात पर भी चर्चा हुई। जिसमें राष्ट्रपति रईसी ने श्री मोदी को श्पश्चिमी उपनिवेशवाद के खिलाफ भारत के संघर्ष्य और श्गुट–निरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक देश होनेश्च की याद दिलाई। रईसी ने कहा, आज भारत से उम्मीद है कि वह गजा के बाशिंदों के खिलाफ जायनवादियों के अपराधों को रोकने के लिए अपनी पूरी क्षमताओं का इस्तेमाल करे। ईरान ने मोदी सरकार को भारत के इतिहास और विदेश नीति का वो अध्याय याद दिलाया, जिसके बूते दुनिया में भारत के नाम की साख बनी हुई थी। लेकिन अफसोस कि मोदी सरकार ने सायास उस अध्याय को बंद करने की कोशिश की है। गुटनिरपेक्षता आंदोलन को औपचारिकता के फ्रेम में जकड़ दिया है और कुछ व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुए श्री मोदी इजरायल या अमेरिका के कृत्यों पर खुलकर बोल भी नहीं रहे हैं। इजरायली सरकार के अपराधों पर अमेरिका से लेकर भारत तक का यह ढीला रवैया समूची मानवता के लिए भारी पड़ेगा।

प्रदूषण काल में बढ़े कैंसर को रोकने की चुनौती?

डॉ. रमेश ठाकुर

आमजन में अक्सर ऐसी धारणाएं रही हैं कि कैंसर मुख्यतः तंबाकू, खैनी–गुटखा या शराब के सेवन से ही होता है। पर, कैंसर अब इन वजहों तक ही सीमित नहीं रहा? इस खतनाक बीमारी ने बड़ा विस्तार ले लिया है। कैंसर अब प्रदूषण के चलते भी विशाल मात्रा में होने लगा है। वायु प्रदूषण से सिर्फ अस्थमा, हृदय संबंधी डिजीज, स्किन एलर्जी या आंखों की बीमारियां ही नहीं होती, बल्कि जानलेवा कैंसर भी होले लगा है। इसलिए यहां जरूरी हो जाता है कि वायु प्रदूषण से फैलने वाले कैंसर के प्रति ज्यादा से ज्यादा देशवासियों को जागरूकता किया जाए और प्रत्येक हथकंड़ों को अपनाकर घरों–घरों तक जागरूकता फैलानी चाहिए। इस काम में सरकारों के साथ–साथ आमजन को भी भागीदारी निभानी होगी। धुंध, प्रदूषित काले बादल व प्रदूषण की मोटी चादर इस वक्त कई शहरों पर चढ़ी हुई है जिसमें दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र सबसे अव्वल स्थान पर है जहां का एक्यूआई लेबर गंभीर स्थिति को भी छलांग लगा चुका है। दिल्ली के अलावा देश के बाकी महानगरों का भी हाल ज्यादा अच्छा नहीं है, वहां भी लोगों को सांस लेना दूभर हो रहा है। अस्पतालों में मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। बहरहाल, कैंसर अब नए–नए रूप में उभर रहा है जिसमें दूषित वायु प्रदूषण अहम भूमिका में है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो विषाक्त और दमघोंटू प्रदूषण कई तरीके से कैंसर को जन्म दे रहा है। रिपोर्ट्स् बताती हैं कि प्रदूषण जब शरीर में घुसता है, तो वो सबसे पहले अंदरूनी कोशिकाओं यानी डीएनए पर प्रहार करके उन्हें डैमेज करता है जो आगे चलकर कैंसर का प्रमुख कारण बनता है। इसके अलावा प्रदूषण से शरीर में इंफ्लेमेशन भी बढ़ता है और इम्यून सिस्टम को बिगाड़ता है। प्रदूषण को लेकर जो स्थिति इस वक्त समूचे हिंदुस्तान में बनी है। ऐसे में हल्के–फुल्के मरीजों के लिए ये वक्त बहुत ही खतरनाक है। ऐसे मरीजों का वायु प्रदूषण के संपर्क में आने का मतलब है कैंसर, स्ट्रोक, श्वसन, हृदय संबंधी रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं को दावत देना? डब्ल्यूएचओ की पिछले साल की एक रिपोर्ट इसी माह नवंबर में आई थी जिसमें बताया गया था कि वायु प्रदूषण से पूरे संसार में प्रतिवर्ष लगभग सात मिलियन मौतें होती हैं जिसमें भारत को दूसरे स्थान पर रखा था। स्थिति इस वर्ष भी भंयकर है। हिंदुस्तान में पिछले तीन वर्षों में कैंसर से अपनी जान गंवाने वालों की संख्याओं पर नजर डालें

तो, सन 2020 में 7,70,230 मौतें थी। जो 2021 में बढ़कर 7,89,202 हुई। वहीं, 2022 में यानी पिछले साल भारत में कैंसर से मरने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ, संख्या बढ़कर 8,08,558 पर पहुंच गई। इस साल का आंकड़ा दो महीने बाद आएगा, निश्चित रूप से वो भी डरावना ही होगा। कैंसर को लेकर जागरूकता की कोई कमी नहीं है। केंद्र सरकार से लेकर सभी राज्य सरकारें भी जागरूकता फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। लेकिन कैंसर है कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा। चिकित्सकों की माने तो कार्सिनोजेन यानी कैंसरजनक जो कैंसर फैलाने वाला पदार्थ है जो तंबाकू, धुआं, पर्यावरण, वायरस किसी से भी हो सकता है। मौजूदा कैंसर ज्यादातर दूषित वातावरण से ही होने लगा है। बढ़ते कैंसर को लेकर जितना आमजन परेशान हैं, उतनी ही हुकूमतें भी दुखी हैं। चलिए बताते हैं कि भारत में 'नेशनल कैंसर जागरूकता' का आरंभ कब हुआ। सितंबर 2014 में, राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस की शुरुआत पहली बार भारत में तबके केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा हुई।

धनतेरसः वाहन बिक्री का टूटेगा रिकॉर्ड, हर सेगमेंट में सकारात्मक वृद्धि, 90 फीसदी एसयूवी की हिस्सेदारी

नई दिल्ली। वाहनों की बुकिंग और खुदरा बिक्री के लिहाज से इस साल का धनतेरस शानदार रहने वाला है। देशभर के बाजारों में खरीदारों की अच्छी-खासी भीड़ दिख रही है। वाहनों के हर सेगमेंट में सकारात्मक वृद्धि दिख रही है। नवरात्र की तरह इस बार धनतेरस पर भी वाहन बिक्री का रिकॉर्ड टूट सकता है।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने बताया कि एसयूवी (स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल) के प्रति बढ़ते आकर्षण की वजह से यह धनतेरस वाहन उद्योग के लिए खास रहेगा। वाहनों की रिकॉर्ड बुकिंग हुई है। कुल बुकिंग में एसयूवी की हिस्सेदारी 90 फीसदी है। हालांकि, हैचबैक और सेडान कारों की बुकिंग में गिरावट देखी जा रही है।

फाडा अध्यक्ष ने बताया, कुल बुकिंग में शहरी मांग का योगदान 60 फीसदी है। ग्रामीण इलाकों से भी 40 फीसदी बुकिंग मिली है, जो उम्मीद से कम है। उन्होंने बताया कि बेहतर इन्वेंट्री की वजह से इस साल वाहनों की वेटिंग अवधि घटकर चार-छह महीने रह गई?0है। पिछले साल इन्वेंट्री में कमी से लोगों को वाहनों की डिलीवरी के लिए दो साल तक इंतजार करना पड़ा था।दोपहिया वाहनों की बिक्री में भी तेजी की उम्मीद है। फाडा का कहना है कि अब तक बुकिंग के आंकड़े अच्छे रहे हैं। धनतेरस पर दोपहिया वाहनों की बिक्री का असर नवंबर के वाहनों की बिक्री के आंकड़ों पर सकारात्मक दिखेगा।

पाकिस्तान ने दो चीनी बैंकों से मांगा 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण

नई दिल्ली। पाकिस्तान इन दिनों राजनीति और अर्थव्यवस्था दोनों मोर्चों पर बदहाली का शिकार है। इस बीच, एक बड़ी खबर सामने आई है। नकदी संकट से जूझ रहे पाकिस्तान को लेकर कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि पड़ोसी देश ने वित्तपोषण अंतर को पाटने के लिए दो चीनी बैंकों से 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर का नया ऋण मांगा है। एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पाकिस्तान ने यह ऋण तब मांगा है जब वह तीन अरब अमेरिकी डॉलर के बेलआउट पैकेज की दूसरी किश्त जारी करने के लिए आईएमएफ के साथ बातचीत कर रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि संघीय सरकार कुल 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण के लिए इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ चाइना और बैंक ऑफ चाइना के साथ बातचीत कर रही है। इसमें कहा गया है कि प्रत्येक बैंक से 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर के वित्तपोषण के लिए संपर्क किया गया है।वित्त मंत्रालय के अधिकारियों के मुताबिक, दोनों बैंकों से बातचीत अंतिम चरण में है। उम्मीद जताई जा रही है कि अगले महीने तक कर्ज मिलने की उम्मीद है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इस ऋण को लेकर जब वित्त मंत्रालय के प्रवक्ता कमर अब्बासी से सवालों किए गए तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। अब्बासी ने इस सवाल का भी जवाब नहीं दिया कि क्या पाकिस्तान ने चीन के स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ फॉरेन एक्सचेंज (एसएएफई) से एक और ऋण मांगा है। इस्लामाबाद ने पहले ही 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण दिया है जिसे पाकिस्तान द्वारा वापस भुगतान करने में असमर्थता के कारण हर साल पुनर्निर्धारित किया जाता है।

15000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी मामले में 32 लोगों के खिलाफ केस दर्ज

मुंबई। मुंबई पुलिस ने करीब 15000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी मामले में महादेव बेटिंग एप के प्रमोटर समेत 32 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। माटुंगा पुलिस के एक अधिकारी के अनुसार मंगलवार को एप के प्रमोटर सौरभ चंद्राकर और प्रमुख आरोपी रवि उप्पल और शुभम सोनी व अन्य के खिलाफ 2019 से धोखाधड़ी करने के आरोपों में प्राथमिकी दर्ज की गई। मुंबई पुलिस के एक अधिकारी के अनुसार 30वें कुर्ला कोर्ट के निर्देश पर भारतीय दंड संहिता के सेक्शन 420(धोखाधड़ी), 120-बी(षडयंत्र), आईटी एक्ट (साइबर आतंकवाद) और गेंबलिंग एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। प्राथमिकी के अनुसार आरोपितों ने करीब 15,000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की।

प्रवर्तन निदेशालय ने पिछले हफ्ते दावा किया था कि फॉरेंसिक विश्लेषण और एक कैश कुरियर के बयान से चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। एजेंसी के अनुसार महादेव बेटिंग एप के प्रमोटर्स छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री को अब तक 508 करोड़ रुपये दे चुके हैं। एजेंसी ने कहा कि आरोपों की जांच की जा रही है। बाद में भाजपा ने एक शुभम सोनी का एक वीडियो जारी जारी किया जिसमें वह कह रहा है कि वह एप का मालिक था और उसके पास छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल को अब तक 508 करोड़ रुपये देने के प्रमाण हैं। बीते 5 नवंबर को केंद्र ने एक आधिकारिक बयान में बताया था कि ईडी के अनुरोध पर महादेव बेटिंग एप और रेड्डीयन्नाप्रेस्टोप्रो समेत 22 अवैध सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म्स को ब्लॉक करने का आदेश दिया गया है।

कच्चा तेल 80 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में गिरावट का रुख है। ब्रेंट क्रूड का भाव 80 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 76 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई फेरबदल नहीं किया है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक गुरुवार को राजधानी दिल्ली में पेट्रोल का भाव 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर टिका रहा। वहीं, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर है। इसी तरह कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है, जबकि चेन्नई में पेट्रोल का भाव 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के चौथे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.20 डॉलर यानी 0.33 फीसदी की उछाल के साथ 79.80 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 0.28 डॉलर यानी 0.37 फीसदी की बढ़त के साथ 75.61 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

एसएंडपी ने भारत के आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को छह फीसदी पर रखा बरकरार

नई दिल्ली। वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 6 फीसदी पर बरकरार रखा है। इसके साथ ही रेटिंग एजेंसी ने कहा है कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में भारत की वृद्धि दर सबसे अधिक होगी।

एसएंडपी रेटिंग्स ने जारी एशिया-प्रशांत साख परिदृश्य-2024 में 'स्लोइंग ड्रैगन्स, रोरिंग टाइगर्स' शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में कहा कि पूंजी की गहनता में सुधार, अनुकूल जनांकिकी और उत्पादकता वृद्धि सुधार के आवश्यक कारक हैं। एजेंसी ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था का वृद्धि का मजबूत रिकॉर्ड है। एसएंडपी ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा कि हमें उम्मीद है कि यह गति जारी रहेगी। एजेंसी ने रिपोर्ट में कहा है कि भारत की आर्थिक वृद्धि काफी हद तक दिख रही है। ऐसे में वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था 6 फीसदी की दर से बढ़ेगी, जबकि वित्त वर्ष 2024-2025 और वित्त वर्ष 2025-26 में आर्थिक वृद्धि दर 6.9 फीसदी रहेगी। एसएंडपी ग्लोबल शोधकर्ताओं के मुताबिक भारत सरकार वित्त वर्ष 2025-26 तक अपने राजकोषीय घाटे के लक्ष्य के करीब बनी रहेगी।

सीबीआईसी चेयरमैन ने कहा- आर्थिक गतिविधियों के कारण अक्टूबर में बढ़ा जीएसटी संग्रह

नई दिल्ली। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के चेयरमैन संजय अग्रवाल ने कहा कि अक्टूबर में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह में वृद्धि आर्थिक गतिविधियों की वजह से है, न कि ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों को कारण बताओ नोटिस के कारण। संजय अग्रवाल ने कारोबार सुगमता पर यहां आयोजित डीपीआईआई-सीआईआई राष्ट्रीय सम्मेलन से इतर मीडिया से बातचीत के दौरान यह बात कही। सीबीआईसी प्रमुख ने कहा कि अक्टूबर में जीएसटी संग्रह में वृद्धि आर्थिक गतिविधियों की वजह से हुई है, न कि ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों को भेजे गए नोटिस के कारण। उन्होंने कहा कि अक्टूबर का जीएसटी राजस्व संग्रह न केवल घरेलू जीएसटी आपूर्ति के कारण है, बल्कि आयात पर आईजीएसटी (एकीकृत जीएसटी) के कारण भी था।

इससे पहले संजय अग्रवाल ने उद्योग मंडल भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के एक कार्यक्रम में कहा कहा कि विभाग जल्दी ही उन कंपनियों को परामर्श भेजना शुरू करेगा, जो अपने 'बी2बी' (कंपनियों के बीच) ग्राहकों को ई-बिल जारी करने में नियम का अनुपालन नहीं कर रही हैं। उन्होंने कहा कि एक अगस्त से पांच करोड़ रुपये से अधिक कारोबार वाली कंपनियों को ई-बिल जारी करना आवश्यक है। जिन लोगों को कानून के अनुसार ई-बिल दाखिल करना था, वहां अनुपालन स्तर बहुत अधिक नहीं है। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने जीएसटी राजस्व संग्रह में अबतक की दूसरी सबसे अधिक वृद्धि दर्ज हुई है। माल एवं सेवा कर राजस्व संग्रह अक्टूबर में 13.4 फीसदी बढ़कर 1.72 लाख करोड़ रुपये रहा है। नई अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था एक जुलाई, 2017 को लागू होने के बाद से यह दूसरा सबसे ऊंचा जीएसटी संग्रह है। इससे पहले जीएसटी राजस्व संग्रह अप्रैल में सबसे अधिक 1.87 लाख करोड़ रुपये रहा था।

सीआईएल ने देबाशीष नंदा को व्यवसाय विकास के निदेशक के तौर पर दिया विस्तार

नई दिल्ली। कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने देबाशीष नंदा को कंपनी के निदेशक (व्यवसाय विकास) के तौर पर सेवा विस्तार देने की घोषणा की है। सीओएल ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि वर्तमान में कंपनी के निदेशक (व्यवसाय विकास) के पद पर कार्यरत देबाशीष नंदा को सेवा विस्तार दिया गया है। नंदा को दो नवंबर 2023 से प्रभावी छह माह की अवधि के लिए या नियमित पदधारी की नियुक्ति तक या अगले आदेश तक सेवा विस्तार दिया गया है। नंदा ने पिछले साल कोल इंडिया लिमिटेड के पहले निदेशक (व्यवसाय विकास) के रूप में अपना पदभार संभाला था। सीआईएल में शामिल होने से पहले नंदा इंडियन ऑयल में कार्यकारी निदेशक (गैस) के रूप में पदस्थ थे।

यात्रा पोर्टल को लंबित एयर टिकट रिफंड नवंबर के तीसरे हफ्ते तक जारी करने का निर्देश

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने कोरोना महामारी के दौरान लागू लॉकडाउन की अवधि में ऑनलाइन यात्रा से जुड़े विभिन्न पोर्टल्स को हवाई टिकट बुकिंग से संबंधित लंबित पैसा उपभोक्ताओं को वापस करने का आदेश दिया है। सरकार ने पोर्टल्स को नवंबर के तीसरे हफ्ते के अंत तक रिफंड जारी करने के निर्देश जारी किए हैं। खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि यात्रा क्षेत्र में उपभोक्ता हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले मुद्दों पर चर्चा के लिए ट्रैवल को लेकर ऑनलाइन सुविधा प्रदाताओं के साथ बैठक की। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में कोरोना महामारी के दौरान 'लॉकडाउन' अवधि के दौरान बुक किए गए टिकट का पैसा वापस नहीं किए जाने के मुद्दे पर चर्चा हुई। मंत्रालय के मुताबिक यात्रा सुविधा प्रदाताओं (एग्रिगेटर्स) को नवंबर के तीसरे सप्ताह के अंत तक कोराना महामारी के दौरान लॉकडाउन के कारण प्रभावित लंबित हवाई किराया राशि का भुगतान करने को कहा गया है। आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया कि ट्रैवल एग्रीगेटर्स को नवंबर के तीसरे हफ्ते के अंत तक लंबित रिफंड का वितरण की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया गया है। उल्लेखनीय है कि कोरोनो महामारी की रोकथाम के लिए 25 मार्च, 2020 से अलग-अलग अवधि के लिये देशभर में 'लॉकडाउन' लगाया गया था। इस दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक उड़ान सेवाओं को भी एक निश्चित अवधि के लिए बंद किया गया था।

सालासर टेक्नो इंजीनियरिंग लिमिटेड का दूसरी तिमाही में शुद्ध लाभ 20 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। सालासर टेक्नो इंजीनियरिंग लिमिटेड (एसटीईएल) का चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी (जुलाई-सितंबर) तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 20 प्रतिशत बढ़कर नौ करोड़ रुपये रहा। कंपनी का पिछले वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में शुद्ध लाभ 7.51 करोड़ रुपये रहा था।

एसटीईएल ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि कुल आय सालाना आधार पर 258.78 करोड़ रुपये से बढ़कर 275.66 करोड़ रुपये हो गई। खर्च 263.32 करोड़ रुपये रहा, जो एक साल पहले समान तिमाही में 248.17 करोड़ रुपये था।

कंपनी के एक प्रवक्ता ने कहा कि इस तिमाही में कंपनी ने मजबूत वित्त प्रदर्शन किया जो महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय ठेकों और क्षमता वृद्धि को दर्शाता है। नई दिल्ली स्थित एसटीईएल दूरसंचार कंपनियों के लिए इंजीनियरिंग, डिजाइनिंग, खरीद, निर्माण आदि का काम करती है।

सीमित दायरे में कारोबार के बाद मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ बाजार

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार आज सीमित दायरे में कारोबार करने के बाद मामूली तेजी के साथ बंद होने में सफल रहा। आज के कारोबार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई थी, लेकिन पूरे दिन बाजार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रही। दिनभर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.05 प्रतिशत और निफ्टी 0.19 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए। आज दिनभर के कारोबार के दौरान फार्मास्यूटिकल, रियल्टी और मेटल सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती रही। इसी तरह एफएमसीजी और ऑटोमोबाइल इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे। दूसरी ओर, बैंकिंग और आईटी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉर्डर मार्केट में आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.82 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.61 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

आज ब्रॉर्डर मार्केट में लगातार हुई खरीदारी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब डेढ़ लाख करोड़ रुपये का इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 320.55 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 319.01 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 1.54 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।

आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 3,828 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,023 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,682 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 123 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,112 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,167 शेयर मुनाफा कमाकर हरे निशान में और 945 शेयर नुकसान उठाकर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 14 शेयर बढ़त के साथ और 16 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल शेयरों में से 33 शेयर हरे निशान में और 17 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 159.55 अंक की मजबूती के साथ 65,101.95 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार शुरू होने के बाद दिनभर बाजार में लिवालों और बिकवालों के बीच खींचतान होती रही, जिसके कारण इस सूचकांक की चाल में भी लगातार उतार चढ़ाव होता रहा। बिकवाली के दबाव में इस सूचकांक ने 91.34 अंक की कमजोरी के साथ 64,851.06 अंक तक गोता भी लगाया। इसी तरह खरीदारी का सपोर्ट मिलने पर इसने 181.60 अंक की तेजी के साथ 65,124 अंक तक पहुंचने में सफलता भी पाई। पूरे दिन हुई खरीद बिक्री के बाद सेंसेक्स 33.21 अंक की बढ़त के साथ 64,975.61 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

अमेजन के म्यूजिक डिविजन में कर्मचारियों की छंटनी शुरू

नई दिल्ली। अमेजन डॉट कॉम ने पुष्टि की है कि उसने अपने म्यूजिक डिवीजन में कर्मचारियों की छंटनी शुरू कर दी है। यह छंटनी पिछले एक साल में 27,000 से अधिक कर्मचारियों को प्रभावित करने वाली नौकरियों में कटौती की श्रृंखला में नवीनतम है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, छंटनी की घोषणा बुधवार को की गई और इसने लैटिन अमेरिका, उत्तरी अमेरिका और यूरोप के कर्मचारियों को प्रभावित किया है।

रिपोर्ट के अनुसार अमेजन के प्रवक्ता के हवाले से छंटनी की पुष्टि की गई है, लेकिन प्रभावित कर्मचारियों की सही संख्या का खुलासा नहीं किया गया है। प्रवक्ता ने कहा, ÷हम अपनी संगठनात्मक जरूरतों की बारीकी से निगरानी कर रहे हैं और ग्राहकों और हमारे व्यवसायों के दीर्घकालिक स्वास्थ्य हमारे लिए सबसे अधिक मायने रखते हैं।

अमेजन म्यूजिक टीम में कुछ भूमिकाएं हटा दी गई हैं। हम अमेजन म्यूजिक में निवेश करना जारी रखेंगे।' वाशिंगटन राज्य, कैलिफोर्निया या न्यूयॉर्क में हाल में बड़े पैमाने पर छंटनी नहीं की गई है, ये कंपनी के सबसे बड़े कर्मचारी केंद्रों में से हैं। कंपनी में छंटनी का फैसला ऐसे समय में लिया गया है जब अमेजन ने तीसरी तिमाही में शुद्ध आय की सूचना दी है। यह आमदनी विश्लेषकों के अनुमानों को काफी हद तक पार कर गई है और वर्ष की अंतिम तिमाही के लिए राजस्व के अनुमानों के अनुरूप है। छुट्टियों के दौरान खरीदारी कारण चौथी तिमाही अमेजन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अमेजन पिछले महीने से अपने स्टूडियो, वीडियो और म्यूजिक डिवीजनों में संचार कर्मचारियों सहित नौकरियों में सावधानीपूर्वक कमी कर रहा है। अमेजन म्यूजिक पॉडकास्ट सेवाएं भी प्रदान करता है यह शुल्क के बदले असीमित संगीत स्ट्रीमिंग सेवाएं प्रदान करने में स्पॉटिफाई, यूट्यूब म्यूजिक और एपल म्यूजिक के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। संकटग्रस्त एडटेक दिग्गज बायजूस ने अक्टूबर में अपने पुनर्गठन अभ्यास के तहत कंटेंट और मार्केटिंग टीमों से लगभग 600 कर्मचारियों को निकाल दिया। सूत्रों के अनुसार इस कदम ने मार्केटिंग टीम की तुलना में कॉन्टेंट और वीडियो टीम को अधिक प्रभावित हुआ। सूत्रों ने कहा कि शिक्षक और एजुकेटर्स जो कॉन्टेंट उत्पादन टीम का हिस्सा थे, वे भी इस कदम से प्रभावित हुए।

8 साल में सालाना 13.63 फीसदी रिटर्न, पहले बॉन्ड की परिपक्वता अवधि 30 नवंबर को होगी पूरी

नई दिल्ली: सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की पहली परिपक्वता अवधि 30 नवंबर को पूरी होगी। आठ वर्षों में इस बॉन्ड ने 13.63त्न की दर से रिटर्न दिया है। परिपक्वता अवधि की कीमत को आरबीआई इसी महीने जारी करेगा। इतना ज्यादा फायदा इसलिए मिला, क्योंकि इस अवधि में सोने की कीमतों में दोगुना से ज्यादा उछाल आया। आरबीआई ने पहली बार गोल्ड बॉन्ड की शुरुआत नवंबर, 2015 में की थी। परिपक्वता अवधि या बॉन्ड के भुनाने का दाम सोने के 999 शुद्धता के पिछले हफ्ते (सोमवार से शुक्रवार) के औसत बंद भाव पर होता है। इस कीमत को इंडियन बुलियन एवं जूलरी एसोसिएशन जारी करता है। आरबीआई ने हाल में 2017-18 के बॉन्ड से समय से पहले भी निकासी की घोषणा की थी।

इसकी कीमत 6,116 रुपये प्रति ग्राम तय की गई थी। ऐसे में पहले बॉन्ड की कीमत इसी के आस पास हो सकती है। पहले चरण की कीमत 2,684 रुपये प्रति ग्राम तय की गई थी। गोल्ड बॉन्ड में शुरुआती निवेश पर सालाना 2.75 फीसदी की दर से तय ब्याज मिलता है।

निवेश की कुल रकम : 99,308 रुपये

प्रति ग्राम सोने का भाव : 6,130 रुपये

निकासी के समय राशि : 2,26,810 रुपये

छमाही आधार पर ब्याज : 1,365 रुपये

कुल वास्तविक रिटर्न : 128 फीसदी

चक्रवृद्धि ब्याज : 10.88 फीसदी

रिटर्न : 13.6फीसदी (10.88+2.75फीसदी)

(गणना 37 ग्राम सोने की 2,684 रुपये प्रति ग्राम कीमत के आधार पर की गई है।)

5 हार के बाद इंगलैंड ने चखा जीत का स्वाद, नीदरलैंड को 160 रन से हराया

धर्मशाला। इंगलैंड ने आखिरकार क्रिकेट विश्व कप 2023 में मिली लगातार पांच हार के बाद जीत का स्वाद चख ही लिया। पुणे के मैदान पर इंगलैंड टीम ने नीदरलैंड के खिलाफ पहले खेलते हुए बेन स्टोक्स के शतक की बदौलत 339 रन बनाए थे। जवाब में खेलने उतरी नीदरलैंड की टीम 179 रन ही बना पाई और 160 रन से मैच गंवा दिया। इंगलैंड अब 8 मैचों में दो जीत और 6 हार के साथ टिका हुआ है। अगर वह 11 नवंबर को पाकिस्तान के खिलाफ आगामी मैच भी जीत लेता है तो वह चैंपियंस ट्रॉफी के लिए क्वालिफाई कर सकता है। वहीं, पाकिस्तान भी सेमीफाइनल में जाने के लिए इंगलैंड को हराना चाहेगी।

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए क्वालीफाई करने के इरादे से इंगलैंड ने पहले खेलते हुए अच्छी शुरूआत की। इंग्लैंड को इस मैच में सलामी बल्लेबाज डाविड मलान ने 10 चौके और दो छक्के की मदद से 74 गेंद में 84 रन की पारी खेल तेज शुरुआत दिलाई जबकि 83 गेंद में 108 रन बनाने वाले स्टोक्स ने मध्यक्रम में टीम को स्थिरता दिलाने के बाद आखिरी ओवरों में तेजी से रन जुटाए। स्टोक्स को आखिरी ओवरों में वोक्स का अच्छा साथ मिला, जिन्होंने 45 गेंद में 51 रन बनाए। पहले बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड को जॉनी बेयरस्टो और मलान ने तेज शुरुआत दिलाई। मलान ने दूसरे ओवर में लोगान वान बीक को फ्लिक करके लगातार तीन चौके लगाए। उन्होंने स्पिनर आर्यन दत्त (2/67) के खिलाफ अपना आक्रमण जारी रखा और अगले ओवर में कवर और गली में दो और चौके लगाए।

नीदरलैंड को 7वें ओवर में पहली सफलता मिली जब पॉल वान मीकेरेन ने दत्त की गेंद पर बेयरस्टो का शानदार कैच लपका। इस विकेट का इंग्लैंड की बल्लेबाजी पर हालांकि कोई फर्क नहीं पड़ा। मलान ने वैन बीक के ओवर में तीन चौके जड़कर इंग्लैंड के स्कोर को 10 ओवर में 70 रन तक पहुंचा दिया।

CWC 2023 में पूरे हुए 500 छक्के, इतिहास में सबसे ज्यादा

मुंबई। क्रिकेट विश्व कप 2023 बड़े हिटर्स के लिए जाना जाएगा। इस दौरान विश्व कप इतिहास में सबसे ज्यादा छक्के लग चुके हैं। अब तक यह रिकॉर्ड 2015 क्रिकेट विश्व कप के नाम पर था जब 463 छक्के उड़े थे लेकिन इंगलैंड बनाम नीदरलैंड मैच के साथ ही महज 40 मुकाबलों में ही क्रिकेट विश्व कप 2023 की यह संख्या 516 तक पहुंच गई है। इस दौरान दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटर सबसे ज्यादा चौके और छक्के लगाने वाली टीम बन गई है। टीम इंडिया की ओर से भले ही रोहित शर्मा सर्वाधिक 22 छक्के लगा चुके हैं लेकिन टीम इंडिया 54 छक्कों के साथ इस लिस्ट में काफी नीचे नजर आ रही है।

विश्व कप में लगे छक्के

साल 2023 : 500+
साल 2019 : 357
साल 2015 : 463
साल 2011 : 258
साल 2007 : 373
साल 2003 : 266
साल 1999 : 153
(आंकड़े 40 मैचों तक)

उसपर पत्थर फेंके जाएंगे- एंजेलो मैथ्यूज के भाई की Shakib Al Hasan को सीधी धमकी

मुंबई। श्रीलंका के हरफनमौला खिलाड़ी एंजेलो मैथ्यूज के भाई ट्रेविन मैथ्यूज ने 'टाइम्ड आउट' मामले के बाद सीधे तौर पर बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन को धमकी दे दी है। शाकिब अल हसन ने मैथ्यूज के खिलाफ अपील वापस लेने से इनकार कर दिया जिसके कारण मैथ्यूज इंटरनेशनल क्रिकेट में टाइम आउट होने वाला पहला खिलाड़ी बन गया था। दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में बांग्लादेश बनाम श्रीलंका मुकाबले के दौरान यह घटनाक्रम देखने को मिला था। यह मामला मैच के दूसरे दिन भी चलता रहा जब अंपायरों ने मैथ्यूज को आऊट देने का कारण स्पष्ट किया था। अंपायरों का कहना था कि मैथ्यूज के टूटे हुए हेलमेट का पट्टा कोई मायने नहीं रखता, क्योंकि वह पहले ही क्रीज पर आने में देर कर चुके थे। अंपायरों को जवाब देने के लिए मैथ्यूज ने एक वीडियो भी शेयर की थी जिसमें वह क्रीज पर 1.56 मिनट में पहुंचते दिख रहे हैं। मैथ्यूज ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी शाकिब अल हसन, बांग्लादेश टीम और अंपायरों के खिलाफ जमकर भड़ास निकाली थी। बहरहाल, मैथ्यूज के भाई ट्रेविन मैथ्यूज ने एक अखबार को कहा कि शाकिब का किसी भी सूरत में श्रीलंका में स्वागत नहीं किया जाएगा। ट्रेविन ने कहा कि हम बहुत निराश हैं। बांग्लादेशी कप्तान में कोई खेल भावना नहीं है और उन्होंने सज्जनों के खेल में मानवता नहीं दिखाई।

कलारीपयट्टु : राष्ट्रीय खेलों में डेब्यू के साथ भारत की इस प्राचीन कला विधा को मिली नई राह

पणजी। केरल के हरे-भरे तटीय इलाकों के बीच, जहां नारियल के पेड़ हवा में लहराते हैं और मसालों की खुशबू से हवा भर जाती है, सदियों पुरानी मार्शल आर्ट शैली सदियों से चुपचाप फल-फूल रही है।

कलारीपयट्टु जिसे अक्सर सभी मार्शल आर्ट की जननी के रूप में जाना जाता है, शारीरिक कौशल, सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक गहराई का एक मनोरम मिश्रण है। हाल के वर्षों में, यह प्राचीन कला रूप पुनर्जागरण का अनुभव कर रहा है, जो अपने सुंदर लेकिन शक्तिशाली मूवमेंट्स से दुनिया को मंत्रमुग्ध कर रहा है। इस लड़ाकू खेल ने गोवा में चल रहे राष्ट्रीय खेलों के 37वें संस्करण में भी अपनी शुरुआत की है, जहां देश के 16 राज्यों के 224 एथलीटों ने भाग लिया।एडवोकेट पूनथुरा सोमन जो की भारतीय कलारीपयट्टु महासंघ के महासचिव हैं, ने कहा, ''यह वास्तव में सभी मार्शल आर्ट की जननी है। इस बारे में कोई संदेह नहीं है। यह हम सभी के लिए बहुत बड़ा सम्मान है कि हमें गोवा में राष्ट्रीय खेलों में इस अद्वितीय खेल आयोजन को प्रदर्शित करने का मौका मिला।'

उन्होंने कहा, 'कलारीपयट्टु को केरल द्वारा आयोजित 2015 के राष्ट्रीय खेलों में एक डेमो खेल के रूप में शामिल किया गया था। हम सभी इस धारणा में थे कि हम 2016 में एक और राष्ट्रीय खेल देखेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसलिए, हमें कलारीपयट्टु को एक प्रतिस्पर्धी खेल की उचित मान्यता प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए इस साल तक इंतजार करना पड़ा।

अतीत की एक झलक

कलारीपयट्टु की उत्पत्ति 3,000 साल से भी अधिक समय पहले केरल में हुई थी, जो परंपरा और इतिहास में बेहद समृद्ध राज्य है। यह नाम दो मलयालम शब्दों से लिया गया है, कलारी जिसका अर्थ है युद्धक्षेत्र और पयट्टु जिसका अर्थ है लड़ाई। योद्धा वर्ग द्वारा विकसित, इसे आत्मरक्षा और युद्ध प्रशिक्षण के साधन के रूप में डिजाइन किया गया था। कलारीपयट्टु कई शताब्दियों तक एक गुप्त रहस्य था, जो केवल गुरु से शिष्य तक गुप्त प्रशिक्षण मैदानों में पारित होता था, जिन्हें कलारी के नाम से जाना जाता है।यह खेल 11वीं शताब्दी ईस्वी में चोल, चेर और पांड्य के शक्तिशाली राजवंशों के शासन के दौरान फला-फूला। हालांकि, ब्रिटिश शासन के दौरान क्रांति के डर से इस खेल पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। वर्ष 1955 में भारतीय कलारीपयट्टु महासंघ (आईकेएफ) की शुरुआत के साथ, भारत के दक्षिणी भाग में पारंपरिक कला रूपों को बढ़ावा देने की पहल के तहत युद्ध खेल ने धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता हासिल की।

सोमन ने कहा, 'हमें वह मान्यता देने के लिए हम भारत सरकार के आभारी हैं जिसके हम वास्तव में लंबे समय से हकदार थे। कलारीपयट्टु जैसा खेल, जो भारतीय लोकाचार और संस्कृति में गहराई से रचा बसा है, को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक युवा इसमें सक्रिय रुचि लें, उन्होंने आगे कहा, 2016 में, यूनेस्को ने कलारीपयट्टु को मानवता की सांस्कृतिक विरासत की अपनी प्रतिनिधि सूची में शामिल किया, जिससे इसके सांस्कृतिक महत्व और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे संरक्षित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

डब्ल्यूपीएल 2024 सीज़न के लिए खिलाड़ियों की नीलामी 9 दिसंबर को मुंबई मे

नई दिल्ली। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के 2024 सीज़न के लिए खिलाड़ियों की नीलामी 9 दिसंबर को मुंबई में होने वाली है।

ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार, पिछली नीलामी के साथ-साथ खिलाड़ियों की रिलीज से बची शेष राशि के अलावा पांचों टीमों में से प्रत्येक को 1.5 करोड़ रुपये का अतिरिक्त पर्स उपलब्ध होगा। कुल मिलाकर, दिन भर चलने वाली नीलामी में भरने के लिए 30 स्लॉट - जिनमें नौ विदेशी भी शामिल हैं - उपलब्ध हैं। हाल ही में, पांच फ्रेंचाइजियों द्वारा कुल मिलाकर 60 खिलाड़ियों को बरकरार रखा गया था, जिनमें 21 विदेशी खिलाड़ी शामिल थे, जबकि 29 को रिलीज कर दिया गया था। पिछली नीलामी से बची शेष राशि के साथ रिलीज से प्राप्त राशि 1.5 करोड़ रुपये के नए पर्स में जोड़ दी जाएगी। डब्ल्यूपीएल के उद्घाटन सीज़न में, टीमों के पास टीम बनाने के लिए 12 करोड़ रुपये थे, यह राशि पांच में से दो टीमों गत चैंपियन मुंबई इंडियंस

और यूपी वारियर्स द्वारा समाप्त कर दी गई थी। शेष तीन टीमों में से, गुजरात जायंट्स के पास 5 लाख रुपये, दिल्ली कैपिटल्स के पास 35 लाख रुपये और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के पास 10 लाख रुपये शेष बचे थे।गुजरात, जो पिछले सीज़न में अंक तालिका में सबसे नीचे रहे थे, उन्होंने अपनी लगभग आधी टीम रिलीज़ कर दी है, और उनके पास 5.95 करोड़ रुपये का उच्चतम पर्स होगा, जिसमें दस स्लॉट - जिनमें तीन विदेशी भी शामिल हैं - भरने के लिए उपलब्ध होंगे। वारियर्स, के पास एक विदेशी सहित पांच स्लॉट भरने के लिए 4 करोड़ रुपये हैं। उनके बाद रॉयल चैलेंजर्स हैं, जो तीन विदेशी सहित सात स्लॉट भरने के लिए 3.35 करोड़ रुपये के साथ चौथे स्थान पर रहे।

पिछले सीज़न की उपविजेता कैपिटल्स के पास तीन स्लॉट भरने के लिए 2.25 करोड़ रुपये होंगे, जिसमें एक विदेशी स्थान भी शामिल है। पांच फ्रेंचाइज़ियों में से मुंबई के पास सबसे छोटा पर्स होगा, एक विदेशी सहित पांच स्लॉट भरने के लिए, 2.1 करोड़ रुपये होगा। डब्ल्यूपीएल का उद्घाटन सत्र सफल रहा, जिसमें पाकिस्तान को छोड़कर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों ने टूर्नामेंट में भाग लिया, जिसमें 22 मैच शामिल थे। सभी मैच मुंबई में तीन स्थानों पर खेला गया था। बीसीसीआई ने अभी तक फ्रेंचाइजी को दूसरे संस्करण के लिए टूर्नामेंट की तारीखों के बारे में सूचित नहीं किया है, और यह भी नहीं बताया है कि टूर्नामेंट होम-एंड-अवे प्रारूप में कई स्थानों पर खेला जाएगा, या पिछले सीज़न की तरह एक ही शहर में।

जिम्बाब्वे श्रृंखला के लिए ह्यूम, रॉक आयरलैंड की टी20 टीम में शामिल

डबलिन। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज ग्राहम ह्यूम और विकेटकीपर-बल्लेबाज नील रॉक को जिम्बाब्वे के खिलाफ 7 दिसंबर से हारे में शुरू होने वाली टी20 सीरीज के लिए आयरलैंड की 15 सदस्यीय टीम में नामित किया गया है। फिओन हैंड और बेन व्हाइट, जो अगस्त में भारत के खिलाफ आयरलैंड की आखिरी टी20 सीरीज का हिस्सा थे, को टीम से बाहर कर दिया गया है।

तीन मैचों की टी-20 श्रृंखला के बाद होने वाली तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए, स्पिन-गेंदबाजी ऑलराउंडर गैरेथ डेलानी, जो सितंबर में इंग्लैंड का सामना करने वाली टीम में थे, को बाहर कर दिया गया है। सफेद गेंद के कप्तान के रूप में स्थायी नियुक्ति के बाद पॉल स्टर्लिंग के नेतृत्व में यह आयरलैंड का पहला दौरा भी होगा। 1 दिसंबर को जिम्बाब्वे जाने से पहले आयरलैंड की टीम 19 से 23 नवंबर तक स्पेन में एक प्रशिक्षण शिविर में पांच दिन बिताएगी। सभी मैच हरारे में खेले जाएंगे, श्रृंखला 17 दिसंबर को तीसरे और अंतिम वनडे के साथ समाप्त होगी।

2022 में पदार्पण करने के बाद, ह्यूम ने चार टी-20 खेले हैं, और उन खेलों में कुल चार विकेट लिए हैं। इस बीच, रॉक 19 टी-20 मैचों का हिस्सा रहे हैं।

आयरलैंड के पुरुष राष्ट्रीय चयनकर्ता एंड्रयू व्हाइट ने कहा, सितंबर में इंग्लैंड में एकदिवसीय श्रृंखला के बाद पुरुष टीम के लिए यह पहली प्रतियोगिता है। यह दौरा एक नए नेतृत्व सेट-अप के तहत एक नए चक्र की शुरुआत का प्रतीक है, और हम यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि यह खेल समूह अगले 50 ओवर के विश्व कप के लिए कैसे विकसित होता है।

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान मेग लैनिंग ने संन्यास की घोषणा की, एक-दो नहीं जीते हैं 7 विश्व कप

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया की महिला कप्तान मेग लैनिंग ने दुनिया को उस समय चौंका दिया जब उन्होंने तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की। दो आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप ट्रॉफी और पांच आईसीसी महिला टी20 विश्व कप खिताब की विजेता लैनिंग ने अपने देश के लिए सभी प्रारूपों में 8000 से अधिक रन बनाने के बाद 31 साल की उम्र में खेल से संन्यास ले लिया।

संन्यास का निर्णय कठिन था

लैनिंग ने आईसीसी के हवाले से कहा, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से दूर जाने का निर्णय लेना कठिन था, लेकिन मुझे लगता है कि अब मेरे लिए सही समय है। मैं 13 साल के अंतर्राष्ट्रीय करियर का आनंद लेने के लिए अविश्वसनीय रूप से भाग्यशाली रही हूं, लेकिन मुझे पता है कि अब मेरे लिए कुछ नया करने का सही समय है। टीम की सफलता के कारण ही आप खेल खेलते हैं, मैं जो करने में सक्षम हूं उस पर मुझे गर्व है और रास्ते में टीम के साथियों के साथ साझा किए गए क्षणों को संजोकर रखूंगी। उन्होंने आगे कहा, मैं अपने परिवार, अपने साथियों, क्रिकेट विक्टोरिया, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया और ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर्स एसोसिएशन को मेरे पसंदीदा खेल को उच्चतम स्तर पर खेलने की अनुमति देने में उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं। मैं उन सभी प्रशंसकों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने मेरे पूरे अंतर्राष्ट्रीय करियर में मेरा समर्थन किया है।

लैनिंग का पहला आईसीसी खिताब 2012 में श्रीलंका में टी20 विश्व कप था और इसके बाद 2013 में भारत में 50 ओवर का विश्व कप खिताब जीता। अल्ट्रा-कंसिस्टेंट दाएं हाथ की खिलाड़ी ने 2014 की शुरुआत में जोडी फील्ड्स से कप्तानी की बागडोर ली और इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने 182 मौकों पर आत्मविश्वास के साथ अपने देश का नेतृत्व किया और स्वर्णिम दौड़ के दौरान ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट के लिए पांच आईसीसी खिताब जीते।

मुझे तो शतक से ज्यादा खुशी जीत से मिली : बेन स्टोक्स

पुणे । नीदरलैंड के खिलाफ 84 गेंद में 108 रन की आक्रामक पारी खेल कर आईसीसी वनडे विश्व कपमें इंग्लैंड को दूसरी जीत दिलाने वाले हरफनमौला बेन स्टोक्स ने यहां कहा कि उन्हें अपनी शतकीय पारी से टीम के जीत की राह पर लौटने की खुशी है। गत चैम्पियन इंग्लैंड की यह लगातार 5 हार के बाद पहली जीत है। खिताबी दौड़ से पहले ही बाहर होने के बाद भी टीम के लिए इस जीत के काफी मायने है क्योंकि विश्व कप की तालिका में शीर्ष 8 स्थान पर रहने वाली टीमें चैम्पियन्स ट्रॉफी 2025 के लिए क्वालीफाई करेंगी। इस मुकाबले से पहले इंग्लैंड 10वें स्थान पर था लेकिन नीदरलैंड पर 160 रन की जीत से टीम 7वें पायदान पर पहुंच गई। इंग्लैंड ने 339 रन बनाने के बाद नीदरलैंड को 179 रन पर आउट कर दिया। मैच के बाद मैन ऑफ द मैच स्टोक्स ने कहा कि मुझे शतक से ज्यादा इस बात की खुशी है कि टीम जीत की राह पर लौटी है। हमारे लिए यह विश्व कप मुश्किल रहा लेकिन इस जीत और शतक को देखकर अच्छा लग रहा है।

राष्ट्रीय खेल : चोट के कारण सात महीने तक रिंग से दूर रहने के बाद भी मनीष ने जीता स्वर्ण पदक

पणजी। चोट के कारण सात महीने बाद रिंग में वापसी करते हुए ओलंपियन मुक्केबाज मनीष कौशिक ने गोवा में 37वें राष्ट्रीय खेलों में पुरुषों के लाइट वेल्टर भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर आलोचकों को अपने कौशल की याद दिला दी। वह आगे भी अपने व्यस्त शेड्यूल के दौरान अपनी लय कायम रखने के लिए उत्सुक हैं।एल 4 और एल5 में चोटों से जूझ रहे, 2019 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता मनीष 2023 सीजन के दौरान काफी समय के लिए रिंग से बाहर हो गए, खासकर सीनियर राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप के बाद जिसमें वह अपने प्रतिद्वंद्वी और छह बार एशियाई चैंपियनशिप के पदक विजेता असम के शिव थापा के खिलाफ पुरुषों के 63.5 किग्रा सेमीफाइनल मुकाबले में हार गए थे। उन्होंने कहा, ' यह

एक मुश्किल दौर था, मैं डिस्क में गंभीर दर्द से पीड़ित था। जब मैंने डॉक्टर से सलाह ली, तो उन्होंने इससे उबरने के लिए फुल रेस्ट की सलाह दी और इसे छह-सात महीने तक के लिए कर दिया। मैं ट्रेनिंग के अलावा हांग्झोऊ एशियाई खेलों सहित कुछ महत्वपूर्ण टूर्नामेंटों में भाग नहीं ले पाया। लेकिन साथ ही मुझे वापस फिट भी होना था।' साराजेवो, बोसिना और हर्जेगोविना में 21वें मुस्तफा हजरुलाहोविच मेमोरियल टूर्नामेंट में वापसी करने के बाद, मनीष ने सितंबर में स्वर्ण पदक जीता। इसके बाद से वह 37वें राष्ट्रीय खेलों और उसके बाद 24 नवंबर से शिलांग में शुरू होने वाली सीनियर पुरुष राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप की तैयारी के लिए कड़ी ट्रेनिंग कर रहे हैं।गोवा के पेडेम इंडोर स्टेडियम में स्वर्ण पदक की ओर बढ़ते हुए मनीष को मेजबान गोवा के युवा मुक्केबाज आकाश गोरखा के खिलाफ कड़ी टक्कर मिली, लेकिन उन्होंने अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए मुकाबले को 4-1 से अपने पक्ष में कर लिया।

कैरेबियाई दौरे पर इंग्लैंड का नेतृत्व करना चाहते हैं जोस बटलर

नई दिल्ली। जोस बटलर दिसंबर में कैरेबियाई दौरे से शुरू होने वाले वनडे और टी20ई क्रिकेट दोनों में इंग्लैंड के कप्तान के रूप में अपनी भूमिका जारी रखना चाहते हैं।बटलर के नेतृत्व वाली इंग्लिश टीम ने बुधवार शाम को विश्व कप में पुणे में नीदरलैंड्स को 160 रनों से हराकर पांच मैचों की हार का सिलसिला खत्म कर दिया, परिणामस्वरूप वे विश्व कप के ग्रुप चरण में फाइनल राउंड में सातवें स्थान पर पहुंच गए।जीत के अंतर से इंग्लैंड को लिए नेट रन रेट (एनआरआर) में भी फायदा मिला और वे नीदरलैंड, श्रीलंका और बांग्लादेश को पछाड़कर तालिका में निचले पायदान से आगे बढ़ते हुए सातवें स्थान पर पहुंच गए। वे अब 2025 चैंपियंस ट्रॉफी के लिए क्वालीफाई कर सकते हैं, भले ही वे रविवार को ईडन गार्डन्स में पाकिस्तान के खिलाफ उनको हार क्यों ने मिले। ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार,

इंग्लैंड के पुरुष क्रिकेट के प्रबंध निदेशक रॉब की ने टूर्नामेंट की शुरुआत में टीम के साथ दो सप्ताह बिताए और अब एक बार फिर वह भारत आ रहे हैं। वह कोलकाता में बटलर और मॉट दोनों से मिलेंगे, जहां अगले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन वनडे और पांच टी20 मैचों के लिए चयन एजेंडे में होगा। बटलर का इस विश्व कप में बल्ले से काफी खराब प्रदर्शन रहा है और उन्होंने आठ पारियों में सिर्फ 13.87 की औसत से 111 रन बनाए हैं। लेकिन उन्होंने इंग्लैंड की जीत के बाद सफेद गेंद के दोनों प्रारूपों में कप्तान बने रहने के अपने इरादे की पुष्टि की। बटलर ने कहा, मैं कैरेबियन में नेतृत्व करना चाहूंगा। मुझे पता है कि रॉब की आज भारत आ रहे हैं। हम उनके और कोच और सभी के साथ कुछ अच्छी बातचीत कर सकते हैं, और उस दौरे के लिए एक योजना बना सकते हैं। लेकिन हाँ, मैं ऐसा करना चाहूंगा। बटलर ने स्वीकार किया कि वह अपनी फॉर्म से बहुत निराश थे। उन्होंने कहा, 'आप आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहते हैं और अपने प्रदर्शन से ऐसा करना चाहते हैं। मैं उस चीज़ पर कायम रहूँगा जिसने लंबे समय तक मेरी अच्छी सेवा की है, जब मेरे पास ये छोटी-मोटी फॉर्म होगी और उम्मीद है कि मैं जल्द ही इसके दूसरे पक्ष से बाहर आ जाऊँगा।

Michael Vaughan ने मोहम्मद हफीज पर कसा तंज, विराट कोहली का उड़ा रहा था मजाक

नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद हफीज ने भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली पर अप्रत्यक्ष रूप से कटाक्ष किया, लेकिन इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर माइकल वॉन एक मजेदार जवाब के साथ कोहली के बचाव में आए। महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में नीदरलैंड बनाम इंग्लैंड मैच के दौरान बेन स्टोक्स ने शतक बनाकर थ्री लायंस को 339 के स्कोर तक पहुंचाया। 84 गेंदों में उनकी 108 रन की पारी ने खेल की दिशा तय कर दी, जिससे इंग्लैंड को जीत मिली थी।

दबाव में असाधारण प्रदर्शन करने के लिए स्टोक्स की सराहना करते हुए, साथ ही दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में विराट के शतक को 'स्वार्थी दृष्टिकोण' बताते हुए परोक्ष रूप से कटाक्ष करते हुए हफीज ने एक्स पर पोस्ट किया- जहाज के रक्षक ज्ञबेनस्टोक्स38। दबाव में पारी की शुरुआत करना अच्छा है। अंत में टीम को जीत दिलाने के लिए अधिकतम रन बनाने के लिए आक्रामक इरादे की आवश्यकता है। स्वार्थी बनाम निःस्वार्थ दृष्टिकोण को अलग करने का सरासर उदाहरण। जैसे ही हफीज का यह ट्वीट आया, वॉन ने इस पर कमेंट करने में देर नहीं लगाई। वॉ ने एक तस्वीर पोस्ट की जिसमें विराट कोहली गेंदबाजी करते नजर आ रहे हैं और वह हफीज को बोल्ड आऊट करने का जश्न मनाते दिख रहे हैं। यह मुकाबला 2012 का है जब भारत और पाकिस्तान की टीमें आमने सामने थीं। वॉन ने फोटो के साथ लिखा- मुझे लगता है मोहम्मद हफीज आपको विराट कोहली ने बोल्ड किया है!!! क्या यही कारण है कि आप लगातार उस पर गुस्सा करते हैं। बता दें कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ विराट की पारी काफी खास थी क्योंकि उन्होंने अपने 35वें जन्मदिन पर अपना 49वां वनडे शतक बनाया था। इसी शतक के साथ उन्होंने सचिन तेंदुलकर के सर्वाधिक वनडे शतकों के रिकॉर्ड की बराबरी की। इस मुकाबले में रवींद्र जडेजा ने पांच विकेट के दम पर ईडन गार्डन्स के मैदान पर दक्षिण अफ्रीका को 243 रनों से हरा दिया था। यह भारत की टूर्नामेंट में 8वीं जीत थी। टीम इंडिया का अब ग्रुप स्टेज में आखिरी मुकबलाा नीदरलैंड के खिलाफ होना है जोकि रविवार को होगा।

कांग्रेस प्रत्याशी रवि जोशी का तूफानी जनसंपर्क

मतदाताओ का मिल रहा है अपार जनसमर्थन

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजलि टुडे

खरगोन। विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी रवि जोशी द्वारा गोगावां ब्लॉक के शाहपुरा, गोगावां, दयालपुरा, सिबार, टेमरना, बेहरामपुर में तूफानी जनसंपर्क के साथ नुक्कड़ सभाए जारी है 7 रवि जोशी ने ग्राम शाहपुरा, गोगावां में मतदाताओ को संबोधित करते हुए कहा की कमलनाथ जी की 15 माह की सरकार ने अनेक जनहितेषी योजनाए लागू की थी जिसमे 100 रूपए में 100 यूनिट बिजली कन्या दान के 25000 रूपए से बढाकर 51000 रूपए, निराशित पेंशन 300 रूपए से बड़ाकर 600 रूपए, खरगोन विधानसभा के सड़ेसात हजार किसानो का कर्ज माफ एक बार फिर मध्यप्रदेश में कमलनाथ जी की सरकार दो तिहाई बहुमत से बनने जा रही है जिसमे हर वर्ग के मतदाताओ के लिए 11 वचन माननीय कमलनाथ जी ने दिए है जिसमे किसानो का 2 लाख तक का कर्ज एक ही फेज में माड़ किया जाएगा मात्रशक्ति को सम्मान देने के लिए 1500 रूपए प्रति माह नारी सामान के, 100 यूनिट बिजली फ्री, पढो पड़ाओ योजना के तहत पहली से बारहवी तक के छात्र छात्राओ को 500, 1000 एवं 1500 रूपए छात्रवर्ती जैसे कई जनहितेषी वचन दिए है जो सरकार बनते ही तत्काल प्रभाव से लागू किए जावेगे वर्ष 2018 में आपने आशीर्वाद देकर भोपाल विधानसभा में भेजा था एक बार पुनः अपना आशीर्वाद दे कर भारी मतों से विजयी बनावे, इस अवसर पर जगह जगह कांग्रेस कार्यकर्ताओ द्वारा पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया

संचालक ने स्टाफ को वितरित किए उपहार एवं बच्चों ने रामलीला का किया मंचन

दैनिक पुष्पांजली टुडे
संवाददाता मालनपुर

मालनपुर/जहां एक और प्राइवेट स्कूल संचालक महंगी महंगी फीस लेकर जमकर कमाई कर रहे एवं स्कूलों में शिक्षा देरहे शिक्षकों को समय पर वेतन भी नहीं दे रहे हैंद्य तो वहीं दूसरी ओर मालनपुर क्षेत्र के समीप संचालित शिवाजी पब्लिक स्कूल के संचालक वरिष्ठ समाजसेवी दिनेश सिंह परिहार उर्फ बंटू ने विद्यालय के शिक्षकों एवं समस्त स्टाफ को महंगे महंगे उपहार और दीपावली की मिठाई देकर सम्मानित कियाद्य इस अवसर पर उन्होने समस्त स्टाफ को बोनस भी दिया द्य उपहार पाकर सभी स्टाफ के लोग खुश हुए और उन्होंने स्कूल संचालक को धन्यवाद दिया द्य स्कूल संचालक ने विद्यालय में अध्यनरत करीब सात सौ

छात्र-छात्राओं को मिठाई के पैकेट और उपहार दिए इस अवसर पर स्कूल संचालक श्री परिहार ने बताया कि विद्यालय में अध्यनरत छात्र मेरे बच्चों की तरह है उनका ख्याल रखना मेरा दायित्व और कर्तव्य है उसे मैं निभा रहा हूंद्य इस अवसर पर उन्होंने बच्चों से कहा की दिवाली खुशियों का पर्व है, सुख-शांति का पर्व है, त्योहार को हंसी खुशी और प्रेम पूर्व अपने परिजनों के साथ मनाएंद्य इस अवसर पर स्कूल संचालक ने बच्चों को पटाखों से होने वाले दुष्परिणाम के बारे में भी बताया उन्होंने बताया कि पटाखों के कान फोडू शोर और प्रदूषण से त्योहार की खुमारी को बर्बाद न करें, पटाखे किसी विनाशकारी हथियार से कम नहीं हैं। पटाखों से सल्फर डाइआक्साइड और नाइट्रोजन डाइआक्साइड आदि हानिकारक गैसें हवा में घुल जाती हैं। जो हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह होती हैं। इस अवसर पर सभी बच्चों ने हाथ उठाकर कहा कि हम ऐसे कोई पटाखे नहीं चलाएंगे जो हमारे लिए नुकसानदायक हैं द्य

छात्रों ने किया रामलीला का मंचन- शिवाजी पब्लिक स्कूल में अध्यनरत छात्रों ने शुक्रवार को दीपावली की छुट्टियों से पहले विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें छात्रों ने राम लक्ष्मण भरत हनुमान माता सीता का बेहतरीन मंचन किया जिसमें बनवास के बाद भगवान राम परिवार सहित अयोध्या में वापस आते हैं तो नगरवासी दीपक जलाकर उनका स्वागत करते हैं द्य छात्रों ने विद्यालय को फूलों से सजाया और दीपक जलाकर भगवान राम का स्वागत किया इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षक मौजूद रहे

धन्य तेरस मतलब की धन्य वो वीर प्रभु की वाणी का रस: मुनि राजपद्मसागरजी

दैनिक पुष्पाजंली टुडे / नारायणलाल सेंणचा

बेंगलूरू । श्री शांतिनाथ श्वेतांबर मूर्ति पूजा जैन संघ एलन पुरम श्रीरामपुरम में आज प्रात: होला में चंद्रप्रभस्वामी की अधिष्ठायिका महालक्ष्मी देवी का आज पूजन एवं हवन हुआ। मुनि राजपद्मसागरजी एवं मुनि श्रमणपद्मसागरजी की यशस्वी मिश्रा में यह भव्यातिभव्य रूप से अनुष्ठान हुआ और महाराज साहब ने बताया कि आज वह दिन है जिस दिन भगवान ने हमारे और सभी जीवो के कल्याण के लिए चरम तीर्थपति हमारे ऊपर का परम करुणा बरसाने वाले हमारे मन के संताप दूर करने वाले ऐसे भगवान महावीर ने आज से 16 प्रहार तक की देशना का प्रारंभ किया था इसलिए आज सभी लोग उनकी देशना सुनकर के अपने आप को धन्य मान रहे थे कि मैं आज परमात्मा की देशना सुनी और मैं धन्य बन गया इस प्रकार से आज के दिन का नाम था धन्यतेरस,महालक्ष्मी पूजन के लाभार्थी रमेश कुमार चेतन कुमार भंडारी रहे।

आंगनबाड़ी केंद्र पर सुपोषण दिवस का आयोजन

पुष्पांजलि टुडे
संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान

पाली। साकदडा आंगनवाड़ी केन्द्र साकदडा पर सुपोषण दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें गर्भवती धात्री महिलाओं ने मेहंदी लगा कर मतदान दिवस लिए लोगों को जागरूक किया गया मेहंदी लगाकर व रंगोली बनाकर मतदान दिवस के दिन ज्यादा से ज्यादा मतदान करने के बारे में ग्राम विकास अधिकारी विक्रम परिहार आंगनवाडी कार्यकर्ता दशरथ कवर ए एन एम पिंकू मीणा आशा सहयोगिनी रूक्मणी साहियका रेखा कवर ग्रामीण गोविन्द दास अन्य लोग की मोजुदगी में कार्यक्रम किया गया

मतदाताओं को किया जा रहा है मतदाता पर्ची का वितरण

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजलि टुडे

विधानसभा निर्वाचन-2023 के लिए खरगोन जिले के सभी 06 विधानसभा क्षेत्रों में 17 नवम्बर को प्रातः 7 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान कराया जाएगा। इसके लिए जिले में कुल 1541 मतदान केन्द्र बनाए गए हैं। इनमें 14 लाख 42 हजार से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर सकेंगे। मतदान की सुविधा के लिए निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार प्रत्येक मतदाता को क्यूआर कोड वाली मतदाता पर्ची बीएलओ के माध्यम से वितरित की जा रही है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कर्मवीर शर्मा ने बताया कि मतदाता मतदान करने के लिए प्राप्त पर्ची के साथ ईपिक कार्ड अथवा निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित 12 फोटोयुक्त पहचान पत्र में से किसी एक का उपयोग करके मतदान कर सकेंगे। केवल मतदाता पर्ची से मतदान की सुविधा नहीं मिलेगी। मतदाता पर्ची से मतदाता को सरल क्रमांक की जानकारी प्राप्त होगी। कलेक्टर ने सभी रिटर्निंग ऑफिसरों को बीएलओ के माध्यम से तीन दिवस में मतदाता पर्चियों का शत-प्रतिशत वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

कांग्रेस वादा नहीं करती, वचन देती है और उसे पूरा भी करती है: विक्रम मस्ताल शर्मा

कांग्रेस प्रत्याशी ने किया बुधनी विधानसभा के भैरूंदा में जनसंपर्क

बुधनी। कांग्रेस पार्टी भारतीय जनता पार्टी की तरह कोई वादा नहीं करती है, बल्कि वचन देती है और उसे हर हाल में पूरा भी करती है। 2018 के विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस ने वचन दिया था कि कांग्रेस की सरकार बनते ही किसानों की कर्जमाफी की जाएगी और सरकार बनने के बाद प्रदेश में विकास की गंगा बहाई जाएगी। किसान, गरीब, महिला, युवाओं सहित हर वर्ग के लिए बेहतर से बेहतर योजनाएं शुरू की जाएंगी। ये बातें बुधनी विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम मस्ताल शर्मा 'हनुमानजी' ने कही। वे शुक्रवार को बुधनी विधानसभा के चीच एवं भैरूंदा नगर में जनसंपर्क कर रहे थे। इस दौरान बुधनी विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं, कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों सहित उनके समर्थक भी बड़ी संख्या में मौजूद रहे।बुधनी विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम मस्ताल शर्मा 'हनुमानजी' ने शुक्रवार को भैरूंदा नगर में जनसंपर्क किया। इस दौरान वे नगर के कई वार्डों सहित बाजार में भी घूमे और लोगों से मिलकर उन्हें कांग्रेस के लिए वोट देने को कहा। इससे पहले विक्रम मस्ताल शर्मा चीच-चमेटी से होते हुए भैरूंदा

पहुंचे। यहां पर उनकी ढोल-बाजों के साथ फूलमाला पहनाकर, फूलों की वर्षा करके भव्य अगवानी की गई। इसके बाद उन्होंने भैरूंदा में जनसंपर्क शुरू किया। इस दौरान आगे-आगे प्रचार रथ चल रहा था तो वहीं पीछे-पीछे ढोल-बाजों के साथ में कांग्रेस के नेता एवं प्रत्याशी विक्रम मस्ताल शर्मा भी चल रहे थे। उन्होंने भैरूंदा में दुकानदारों सहित नगर के विभिन्न वार्डों में पहुंचकर कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने की अपील की है। इस मौके पर उनका जगह-जगह फूलमाला पहनाकर स्वागत, सत्कार किया गया तो वहीं लोगों ने बड़-चड़कर समर्थन भी दिया।

धनतेरस की बधाई दी- कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम मस्ताल शर्मा 'हनुमानजी' ने धनतेरस पर्व के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों सहित बुधनी विधानसभा के लोगों को धनतेरस की हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं भी दी है। उन्होंने अपने बधाई संदेश में कहा है कि मां लक्ष्मी सभी के जीवन में खूब धन वर्षा करे, सभी के कष्टों को दूर करें, सभी के जीवन में खुशियां ही खुशियां दें। उन्होंने सभी विधानसभा वासियों से अपील भी की है कि वे इस खुशियों के त्यौहार को धूमधाम से मनाएं एवं पटाखों एवं आतिशबाजी से खुद को बचाते हुए अपने परिवार की रक्षा भी करे।

सहकारिता मंत्री के.एन . राजाणा को किया आमंत्रित

दैनिक पुष्पाजंली टुडे /नारायणलाल सेंणचा

बेंगलूरू। सीरवी समाज नवनिर्मित भवन तुमकुर उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में के.एन. राजाणा सहकारिता मंत्री को सीरवी समाज के पूर्व अध्यक्ष हेमराज सेणचा, पूर्व अध्यक्ष चिमनाराम भायल, भूराराम भायल, प्रकाश देवड़ा ने पत्रिका देकर आंमत्रित किया। इस अवसर पर संस्था के पूर्व अध्यक्ष हेमराज सेंणचा ने बताया कि तीन दिवसीय कार्यक्रम 17 नवम्बर से शुरू होगा। समाज के धर्मुरू दीवान साहब के सानिध्य में भवन उद्घाटन महोत्सव में समाज के अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्य उपस्थित रहेंगे

आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए जैतवारा पुलिस और असम बटालियन की संयुक्त पैदल फ्लैग मार्च

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

जैतवारा -आगामी विधानसभा चुनाव में निष्पक्ष एवं निर्भीक मतदान कराने चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर जिले के जैतवारा थाना पहुंची असम बटालियन की टीम ।असम बटालियन और जैतवारा थाना पुलिस झरी अकाउंना कुबरी पासी पोइधा खमरिया तुर्री में बूथ चेकिंग फरारी काट रहे आरोपियों की धर पकड़ के साथ-साथ ग्रामीण गांव में समझाइए दी गई कि शांतिपूर्ण ढंग से मतदान करने की समझाइए दी गई एवं गांव में पैदल मार्च किया गया एवं बाजार में पैदल फ्लैग मार्च किया गया,लगातार थाना क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में भ्रमण कर हर गतिविधि पर रख रहे पैनी नजर।

जिले के प्राचीन सरोवर गौरी किनारे मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

समूह की महिलाओं ने शहर के विभिन्न मार्गों से निकाली मतदाता जागरूकता रैली

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । जिला प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत आज स्व-सहायता समूह की महिलाओं द्वारा मतदान का प्रतिशत बड़ाने के लिए भिण्ड शहर के प्राचीन सरोवर गौरी किनारे कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सर्व प्रथम उपस्थित सभी महिलाओं से मतदान का प्रतिशत को बड़ाने के लिए के चर्चा की और अपने आसपास के अधिक से अधिक मतदाताओं को वोट डालने के लिए प्रेरित करने कहा गया ताकि सभी मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर मतदान आवश्यक रूप से करें।इसके बाद सभी महिलाओं को शपथ दिलाई गई और मतदाताओं को जागरूक करने के लिए विजय सक्सेना सिटी मिशन मैनेजर के द्वारा रैली को झंडी

दिखाकर रवाना किया गया, जो शहर के विभिन्न मार्गों में भ्रमण कर मतदाताओं को जागरूकता का संदेश दिया। इस अवसर पर नगर पालिका भिण्ड से अमरीश शुक्ला सिटी मिशन मैनेजर, आजीविका मिशन से अमृतलाल डीपीएम,सीमा भदौरिया,अनुश्री पाण्डेय, हबीब खान एवं समूह की सैकड़ों महिलाएं उपस्थित रहीं।

अपनो से उपेक्षित करोड़ों की मालकिन वृद्धा का निधनवृद्ध आश्रम द्वारा हुआ देहदान

सीहोर/विदिशा। मध्य प्रदेश के विदिशा जिले के ग्राम ढोलखेड़ी इमलिया निवासी 80 वर्षीय श्रीमती शकुन बाई तिवारी का अस्पताल में दुखद निधन हो गया। उनकी मृत्यु के समय परिवार का कोई भी सदस्य मौजूद नहीं था।ज्ञात हो कि 27 जुलाई 2023 को ग्राम के सरपंच और पुलिस प्रभारी द्वारा मरणासन्न अवस्था में शकुन बाई को आश्रम में लाया गया था। हालांकि वृद्धा के पास 100 बीघा जमीन और संपत्ति थी जो उनके करीबी रिश्तेदारों ने उनके जीते जी धोखे से अपने नाम कर ली थी। वृद्ध आश्रम में आने के बाद अनेक दैनिक समाचार पत्रों ने वृद्ध माता की व्यथा कथा प्रकाशित की थी। फ़िर भी उनके किसी भी परिजन ने वृद्धा की देखभाल और उनका हक दिलाने की जिम्मेदारी नहीं उठाई। आश्रम की अध्यक्ष श्रीमति इन्दिरा शर्मा और श्री वेद प्रकाश शर्मा और उनकी टीम देखरेख व सेवा कर रही थी। शकुन बाई तिवारी की कोई संतान नही थी।अपने पति की मृत्यु के बाद उन्हें अपने ही परिजनों के छल कपट का शिकार होना पड़ा। अपनी 100 बीघा जमीन छोड़कर उन्हें श्री हरि वृद्ध आश्रम में मजबूरी में आना पड़ा। आश्रम में उनकी सेवा देखभाल और मान सम्मान मिलने के बाद वे कुछ हद तक ठीक भी हो गई थी। फिर भी कोई भी उनसे आश्रम में मिलने नहीं आया। उनकी बीमारी के चलते परिजनों को सूचना दी गई थी तब उनकी देवरानी का बेटा नारायण शर्मा वृद्ध आश्रम आया था। जब उन्हें बाजार से दवा लाने भेजा तो वह फिर दोबारा वापस नहीं आया। उनका स्वास्थ्य अधिक बिगड़ने पर उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती किया गया जहां सघन उपचार के चलते उनका देहांत हो गया। श्रीमती शकुन तिवारी की अंतिम इच्छा अनुसार उनका देहदान शासकीय अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज में किया गया। उनके परिजनों को सूचना देने पर भी वह नहीं पहुँचे। परिजनों के नाम पर उनकी देवरानी का बेटा नारायण शर्मा ने अस्पताल में पहुंच कर देहदान कराया। इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज के प्राध्यापक, छात्रों सहित डीन सुनील नंदेश्वर के अपनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर श्री हरि वृद्ध आश्रम अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा शर्मा, श्री वेद प्रकाश शर्मा सहित उनके समस्त स्टाफ मौजूद था ।

जनता ने ठाना है कांग्रेस को लाना है संभागीय प्रवक्ता ने एक दर्जन ग्रामों में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में मतदान करने की अपील

दैनिक पुष्पाजली टुडे

गोहद विधानसभा क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक ग्रामों में संभागीय प्रवक्ता कांग्रेस कमेटी एवं गोहद विधानसभा मीडिया प्रभारी सौरभ सिंह तोमर ने कांग्रेस प्रत्याशी केशव देसाई के समर्थन में विधानसभा के हरगोविंदपुर मोती सिंह का पूरा श्याम सिंह का पूरा बूटी कुइया धमशा आदि ग्रामों में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में मतदान करने की अपील ग्रामीण नागरिकों से की है इस अवसर पर कांग्रेस प्रत्याशी उनके साथ ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान करने की अपील अपने समर्थन में कर रहे थे सौरभ सिंह तोमर ने ग्रामीण मतदाताओं से कहा कि मध्य प्रदेश में जनता की चुनी सरकार को धन बल के दम पर गिरकर मध्य प्रदेश में भ्रष्टाचार चरम पर पहुंचा दिया आज किसान परेशान है

धनतेरस के पर्व पर पुलिस थाना करैरा अधिकारियों ने कराया पति पत्नी के बीच हुये झगड़े में कराया राजीनामा

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

करैरा,धनतेरस के त्यौहार पर करैरा नगर के न्यू ब्लॉक मौहल्ला निवासी दंपत्ति बीपी जाटव व शशि जाटव का पारिवारिक बातों को लेकर लंबे समय से झगड़ा चल रहा था,जिसे लेकर शशि ने थाना करैरा में आवेदन दिया था । आज एएसआई शैलेंद्र सिंह चौहान व प्रधान आरक्षक राजेंद्र यादव द्वारा दंपति को पुलिस थाने बुलाकर दोनो को समझाया गया इसके परिणाम स्वरुप पति पत्नी में सुलह हुई और भविष्य में दोनों ने लड़ाई झगड़ा नहीं करने का वादा किया ।

चाचौड़ा विधानसभा में त्रिकोणीय संघर्ष होता नजर आ रहा है रोचक

योगेश शर्मा
राजोरिया
चाचौड़ा
पुष्पांजलि टुडे

चाचौड़ा विधानसभा का चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आता जा रहा है रोचक होता नजर आ रहा है एक और कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार लक्ष्मण सिंह जी अपनी परिचित शैली में जनता के बीच जाकर भय मुक्त चाचौड़ा जिला बन के आश्वासन के साथ नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से प्रचार प्रसार में जुटे हैं तो दूसरी ओर भाजपा प्रत्याशी प्रियंका मीणा और भाजपा छोड़ आम आदमी पार्टी प्रत्याशी ममता मीना आपस में एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाने में लगे हुए हैं अब देखना है कि मतदाता किसे अपना नेता चुनता है भाजपा प्रत्याशी को कांग्रेस की बजाय भाजपा से बागी हुई आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी ममता मीना से नुकसान होता नजर आ रहा है दोनों ही प्रत्याशीआईपीएस एवं आई आर एस की पति हैं तो कांग्रेस से लक्ष्मण सिंह जी भी पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी के छोटे भाई एवं छोटे राजा साहब के नाम से जाने जाते हैं समय काम है और मतदाताओं को रिझाने में तीनों ही उम्मीदवार कोई कसर छोड़ने नजर नहीं आ रहे हैं अगर आम जनता की माने तो इस बार भी हार जीत का अंतर बहुत ही काम नजर आ रहा है

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी जिला शिवपुरी द्वारा पुलिस अधीक्षक जिला शिवपुरी की अनुशंसा पर

दिनांक 10.11.2023 को जिले के निम्नलिखित 04 अपराधियों को तीन माह के लिये जिलाबदर एवं 01 अपराधी को थाना अटैच किये जाने का आदेश पारित किया ङ्क

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

शिवपुरी जिलाबदर

1.राजू सिंह पुत्र मानसिंह ठाकुर वैश उम्र 39 साल निवासी ग्राम थरखेड़ा थाना अमोला जिला शिवपुरी (म.प्र.)

2.कैलाश पुत्र बच?चू सिंह यादव उम्र 47 साल निवासी ग्राम सरखड़पुर थाना नरवर जिला शिवपुरी (म.प्र.)

3.रामकुमार पुत्र ओमप्रकाश रावत उम्र 38 साल निवासी ग्राम खैरोना हाल कोटानाका थाना तेंदुआ जिला शिवपुरी (म.प्र.)

4.बलवीर रावत पुत्र कैलाश रावत उम्र 35 साल निवासी ग्राम लालगढ़ थाना सिरसौद जिला शिवपुरी (म.प्र.)

थाना अटैच

1.बनवारी पुत्र सुंदरा आदिवासी उम्र 57 साल निवासी ग्राम सोनीपुरा थाना पोहरी जिला शिवपुरी (म.प्र.)

डैमेज कंट्रोल विशेषज्ञ प्रभात झा ग्वालियर आये, चार दिन रहेंगे

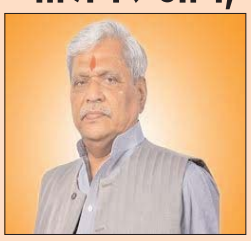

ग्वालियर। भाजपा के दिग्गज नेता व पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा ग्वालियर में हैं। दीपावली पर्व पर वह अब लगभग एक सप्ताह का प्रवास ग्वालियर करेंगे और अपने गोला का मंदिर निवास सहयोग पर आम लोगों, कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे।प्रभात झा 11 नवंबर नरक चतुर्दशी छोटी दीपावली पर मुक्तिधाम पर दीप जलायेंगे। इस मौके पर उनके साथ भाजपा कार्यकर्ता व पदाधिकारी भी रहेंगे। ज्ञातव्य है कि प्रभात झा के ग्वालियर आने से चुनाव ल? रहे भाजपा प्रत्याशी बेहद खुश है, वह सभी प्रत्याशियों से भी मिल सकते है और कार्यकर्ताओं को चुनाव जीतने के टिप्स भी देंगे। वैसे भी प्रभात झा को डैमेज कंट्रोल में महारत हासिल हैं और उन्होंने पिछले कई चुनावों में हारती बाजी को भी जीत में बदला हैं।

प्रशिक्षण स्थल पर बनाए गए सुविधा केन्द्रों में अब तक 6257 डाक मत पत्र डाले गए

ग्वालियर ।7 भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत ग्वालियर जिले में चुनाव ड्यूटी कर रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को डाक मत पत्र के जरिए मताधिकार की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। मतदान दलों के प्रशिक्षण स्थल पर विधानसभा क्षेत्रवार बनाए गए सुविधा केन्द्रों में अब तक कुल 6 हजार 257 डाक मत पत्र डाले जा चुके हैं। प्रशिक्षण के पाँचवे दिन यानि शुक्रवार 10 नवम्बर को 1145 अधिकारियों व कर्मचारियों ने डाक मत पत्र के जरिए अपने मताधिकार का उपयोग किया। पुलिस कर्मी भी ब?-च?कर डाक मत पत्र डालने पहुँच रहे हैं।

यहाँ भारतीय यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन संस्थान में मतदान दलों को तृतीय एवं फायनल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यहाँ पर विधानसभा क्षेत्रवार

डाक मत पत्रों के लिये सुविधा केन्द्र बनाए गए हैं। डाक मत पत्र डालने का काम प्रशिक्षण स्थल पर 11 नवम्बर को भी जारी रहेगा। डाक मत पत्र के नोडल अधिकारी एवं संयुक्त कलेक्टर अशोक चौहान ने बताया कि अब तक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र-14 ग्वालियर ग्रामीण के सुविधा केन्द्र पर 561, विधानसभा क्षेत्र-15 ग्वालियर में 1346, विधानसभा क्षेत्र-16 ग्वालियर पूर्व में 2099, विधानसभा क्षेत्र-17 ग्वालियर दक्षिण में 1073, विधानसभा क्षेत्र-18 भितरवार में 413 एवं विधानसभा क्षेत्र-19 डबरा (अजा) के लिये बनाए गए सुविधा केन्द्र में 765 डाक मत पत्र डाले जा चुके हैं। तृतीय चरण के प्रशिक्षण के पाँचवे दिन यानि शुक्रवार को विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र-14 ग्वालियर ग्रामीण के सुविधा केन्द्र में 85, विधानसभा क्षेत्र-15 ग्वालियर में 317, विधानसभा क्षेत्र-16 ग्वालियर पूर्व में 375, विधानसभा क्षेत्र-17 ग्वालियर दक्षिण में 295, विधानसभा क्षेत्र-18 भितरवार में 33 एवं विधानसभा क्षेत्र-19 डबरा (अजा) के लिये बनाए गए सुविधा केन्द्र में 40 डाक मत पत्र डाले गए।

जीवन के 96 बसंत देख चुके रमाकांत तारे ने अपने घर से डाला वोट

ग्वालियर। जीवन के 96 बसंत देख चुके रमाकांत तारे ने यूँ तो कई बार अपने मताधिकार का उपयोग किया। पर पहले हर बार मतदान केन्द्र पर जाकर वोट डाले। इस बार उन्हें थो?ी चिंता थी कि अगर किसी का सहारा नहीं मिला तो कैसे वोट डालेंगे। उनके इस असमंजस को भारत निर्वाचन आयोग ने दूर कर दिया। शुक्रवार 10 नवम्बर को मतदान दल लेले साहब के बगीचे के समीप स्थित उनके घर पहुँचा और विधिवत बूथ बना दिया। फिर क्या रमाकांत ने खुशी-खुशी वोट डालकर अपने मताधिकार का उपयोग किया। सम्पूर्ण मतदान प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी की गई। इसी तरह बिजली घर के सामने गोल पहाड़िया निवासी 84 वर्षीय बुजुर्ग महिला श्रीमती छोटी बी का वोट डलवाने मतदान दल उनके घर पहुँचा। वोट डालने के बाद छोटी बी की खुशी देखते ही बनी। विधानसभा क्षेत्र ग्वालियर दक्षिण के अंतर्गत पागनबीसी मतदान केन्द्र के

नजदीक निवासरत 96 वर्षीय बुजुर्ग महिला श्रीमती दुर्गा बाई ने भी अपने घर पर ही वोट डाला। इसी प्रकार 85 वर्षीय श्रीमती सरस्वती देवी व श्रीमती सरला देवी, दिव्यांग युवक कृष्णकांत व श्री सेवाराम के घर पर जाकर मतदान दल ने वोट डलवाए। बुजुर्गों व दिव्यांगों के घर पर मतदान दल लेकर पहुँचीं सेक्टर अधिकारी एवं सहायक आयुक्त श्रम श्रीमती संध्या सिंह बताती हैं कि जब बुजुर्गों को पता चला कि वोट डलवाने सरकारी मुलाजिम उनके घर आए हैं तो उनकी ऊर्जा व उमंग देखते ही बनी। वोट डालने के बाद सभी बुजुर्ग व दिव्यांग मतदाताओं ने भारत निर्वाचन आयोग के प्रति धन्यवाद जताया। ज्ञात हो कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत ग्वालियर जिले के भी सभी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के उन बुजुर्गों और 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले मतदाताओं को घर बैठे ही मतदान की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है, जिन्होंने घर पर ही वोट डालने की सहमति दी है। संयुक्त कलेक्टर एवं डाक मत पत्र प्रभारी अशोक चौहान ने बताया कि जिले में 3275 बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं ने घर से ही वोट डालने की सहमति दी है। इनमें कुल 2562 बुजुर्ग एवं 713 दिव्यांग मतदाता शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 11 नवम्बर व 13 नवम्बर को भी बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं के घर-घर जाकर मतदान कराया जायेगा।

मैं जब मुख्यमंत्री था तब भगवान सिंह यादव से बहुत डरता था : दिग्विजय सिंह

ग्वालियर। पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा है कि प्रदेश में भाजपा से जनता तंग का चुकी है और वह उसके खिलाफ अपना मत देगी। पूर्व मुख्यमंत्री ने गोकुलपुरा में गत रोज एक चुनावी सभा को संबोधित किया। इस दौरान पूर्व भाजपा विधायक बृजेन्द्र तिवारी ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। दिग्विजय सिंह ने कहा कि मैं जब मुख्यमंत्री था तब ग्वालियर के नेता पूर्व मंत्री भगवान सिंह यादव एवं बिलासपुर के कालीचरण जी से बहुत डरता था। क्योंकि यह दोनों पूर्णतः स्पष्ट और मेरे गुरू अर्जुन सिंह के बेहद नजदीक थे। इस मौके पर नेता प्रतिपक्ष डा. गोविंद सिंह ने कहा कि भाजपा के भय, भ्रष्टाचार का जवाब इस बार जनता देगी। सभा में विधायक

लाखन सिंह, प्रवीण पाठक, राष्ट्रीय प्रवक्ता सुरेन्द्र राजपूत, अनुमा आचार्य, प्रदेश सहप्रभारी शिव भाटिया, पूर्व विधायक मदन सिंह कुशवाह, दौलत सिंह, जण्डेल सिंह, हाकिम सिंह यादव, लाखन सिंह बघेल, फूल सिंह बरैया, दिनेश पांडे, बीके शर्मा, पूर्व सांसद रामसेवक सिंह, रविन्द्र सिंह, प्रभुदयाल जौहरे, अमर सिंह माहौर आदि उपस्थित थे।

मप्र भाजपा गुटबाजी में नेतृत्व विहिन, लाड़ली बहना ही नहीं मामी, चाची, भाभी, बुआ सबको मिलेगा लाभ : राज बब्बर

ग्वालियर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और प्रख्यात सिने अभिनेता राज बब्बर ने कहा है कि मध्यप्रदेश में भाजपा पूरी तरह गुटबाजी में विभक्त होकर नेतृत्व विहीन हो गई है। इसी कारण मध्यप्रदेश का विधानसभा चुनाव भाजपा किसी भी नेता के चेहरे पर नहीं ल? रही हैं। वहीं कांग्रेस कमलनाथ के नेतृत्व में पूरी तरह एकजुट है और राज्य में सरकार बनाने की ओर अग्रसर है। राज बब्बर ने यह भी कहा कि मध्यप्रदेश की जनता कर्नाटक की तरह बदलाव चाहती है क्योंकि जनता सरकार की खरीद फरोख्त किये जाने को भूली नहीं है, जिस तरह कमलनाथ की चुनी हुई सरकार को साजिश के तहत गिराया गया उससे जनता में भाजपा सरकार व उसके मुखिया शिवराज सिंह के प्रति जबरदस्त आक्रोश हैं।ग्वालियर में पत्रकारों से चर्चा में राज बब्बर ने कहा कि इस बार कांग्रेस 140 से उपर सीटें जीत रही है, वह पूरे प्रदेश में जगह-जगह घूमे है जिस तरह से आम जनता

का रूझान कांग्रेस के प्रति दिखा है उससे स्पष्ट ह कि मप्र में बदलाव की बहार वह रही है। राज बब्बर ने कहा कि स्वयं शिवराज सिंह भी परेशान है उन्हें पार्टी ने चेहरा न बनाकर उनको आइना दिखा दिया है बल्कि मध्यप्रदेश के ब? नेताओं को भी एकाएक विधानसभा चुनाव ल?कर उनको संकट में फंसा दिया है। अब मजे की बात यह है कि मप्र में कोई भी चेहरा मुख्यमंत्री का नहीं हैं पूरी भाजपा प्रदेश में लीडरविहीन हैं। कांग्रेस नेता राज बब्बर ने कहा कि भाजपा नेता विशेषकर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह यह अफवाह फैला रहे हैं कि कमलनाथ सत्ता में आये तो लाडली बहना योजना बंद कर दी जायेगी। हम कहते है कि लाडली बहना नहीं कमलनाथ सरकार के सत्ता में आते ही लाडली बहना के साथ चाची, अम्मा, मामी, बुआ, भाभी सभी को नारी सम्मान योजना का लाभ दिया जायेगा। राज बब्बर ने कहा कि भाजपा मध्यप्रदेश में परिवर्तन की बयार से घबराहट में है, प्रधानमंत्री मोदी सहित गृहमंत्री अमित शाह को गांव-गांव, शहर-शहर घूमना प? रहा है। राज बब्बर ने कहा कि कमलनाथ ने जो वायदे किये है वह सरकार के पहले दिन से ही पूरे किये जायेंगे। पत्रकारवार्ता में राष्ट्रीय प्रवक्ता सुरेन्द्र राजपूत, रिटायर्ड विंग कमांडर अनुमा आचार्य, प्रदेश प्रवक्ता धर्मेन्द्र शर्मा, प्रदेश सहप्रभारी शिव भाटिया, जिलाध्यक्ष डा. देवेन्द्र शर्मा मौजूद रहे।

मतदान प्रतिशत बढ़ाने में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी होंगे पुरस्कृत

ग्वालियर । मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 के लिए प्रदेश में 17 नवंबर को मतदान होगा। प्रदेश में इस बार मतदान प्रतिशत को ब?ाने में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी, रिटर्निंग अधिकारी और बूथ लेवल अधिकारी को नकद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। यह नवाचार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय भोपाल द्वारा किया जा रहा है।मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि निर्वाचन कार्य में बीएलओ की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रदेश के सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों में से प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में सर्वाधिक मतदान प्रतिशत वाले शीर्ष 3-3 बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) को सम्मानित किया जाएगा। इस तरह से प्रदेश के 690 बीएलओ को पुरस्कार के रूप में 5-5 हजार रुपये की नकद राशि व प्रशस्ति पत्र भेंट की जाएगी। इसी प्रकार स्वीप गतिविधियों के माध्यम से जिले में मतदान प्रतिशत ब?ाने और निर्वाचन प्रक्रिया में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 230 विधानसभा क्षेत्रों में से शीर्ष-3 विधानसभा क्षेत्रों के रिटर्निंग अधिकारियों को 1-1 लाख रुपये और शीर्ष -3 कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी और जिला नोडल अधिकारी (स्वीप) को संबंधित विधानसभा क्षेत्र एवं जिले में स्वीप गतिविधियों के लिए 5-5 लाख रुपये की पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया जाएगा। चयनित अधिकारियों-कर्मचारियों को यह पुरस्कार 25 जनवरी 2024 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा भव्य और गरिमामय सम्मान समारोह में दिया जाएगा।

विधायक सिकरवार ने पैदल रोड शो कर जनसंपर्क किया

ग्वालियर। ग्वालियर पूर्व विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी एवं विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने हजारों कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ इंदरगंज, नया बाजार एवं लोहिया बाजार में पैदल रोड शो कर जनसंपर्क किया। मतदाताओं के बीच सतीश का जादू सर चड़कर बोला । जनसंपर्क के दौरान व्यापारियों ने डॉ. सतीश सिकरवार का पुष?प वर्षा कर पुष?पहार पहनाकर, आतिशबाजी चलाकर और फलों व लड्डूओं से तुलादान कर आत्मीय स्वागत किया। इससे पहले कांग्रेस के महिला-पुरूश कार्यकर्ता इंदरगंज चौराहे पर एकत्रित हुए और ढोल-ताशों की ग?गडाहट के बीच विधायक डॉ. सिकरवार एवं महापौर डॉ. शोभा सिकरवार ने जनसंपर्क शुरू किया। एक-एक दुकान पर जाकर मतदाताओं से आर्शीवाद लिया, व्यापारियों ने विधायक डॉ. सिकरवार का पुष?पहार पहनाकर आत्मीय स्वागत किया। तीन घण्टे चले बृहद जनसंपर्क में भारी संख्या में लोग रैली में शामिल हुए। जनसंपर्क के दौरान विधायक डॉ. सिकरवार ने आमजनों एवं व्यापारियों से चर्चा करते हुये कहा कि जी.एस.टी. से व्यापारी परेशान, मंहगाई ने हर वर्ग की कमर तो? दी और सरकार झूँठ पर झूठ बोल कर जनता को गुमराह कर रही है। भाजपा ने सर्वहारा वर्ग की भलाई के लिए कोई काम नहीं किया है। मेरा मानना है कि लोहिया बाजार और दाल बाजार के विकास व प्रगति का काम व्यापारी भाइयों की मंशा के अनुरूप होना चाहिए। क्योंकि शहर के विकास में इस वर्ग का बहुत ब?ा योगदान रहता है। विधायक डॉ. सिकरवार ने कहा कि मंहगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से जनता परेशान है और जी.एस.टी. से व्यापारी वर्ग के सामने इतनी ब?ी परेशानी ख?ी कर दी है कि रोजगार करना मुश्किल हो गया है। खाद्य पदार्थों पर भी जीएसटी लगाकर खान पान की वस्तुएं भी मंहगी कर दी हैं। कांग्रेस की सरकार बनने पर राज्य स्तर पर इस टैक्स को खत्म कर जनता और व्यापारियों को राहत प्रदान की जाएगी। गरीब की थाली भाजपा ने खाली कर दी है। उन्होंने कहा कि शहर के विकास का रोड मैप तैयार करते वक्त सभी वर्गों के सुझाव लेकर कांग्रेस पार्टी काम करेगी। उन्होंने कहा की हाथ ठेला वालों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए उन्हें भी राहत पैकेज देने के लिए कांग्रेस सार्थक पहल करेगी, क्योंकि बरसात के समय इनका कारोबार प्रभावित होता है। कांग्रेस पार्टी हर वर्ग के विकास की चिंता करेगी। इसके साथ ही पूर्व विधायक सत्यपाल सिंह सिकरवार, सत्यप्रकाश सिंह सिकरवार, मानवेन्द्र सिंह सिकरवार 'गांधी' एवं आदित्य सतीश सिकरवार ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ ग्वालियर पूर्व के अन्य क्षेत्रों में घर-घर जाकर जनसंपर्क किया।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478